प्रभात की किरण

PRAYATN

ORACLE

प्रकाशनः प्रभात की किरण

संस्करणः 2018

प्रकाशकः

प्रयत्न संस्था, 68/337, प्रताप नगर,

सांगानेर–302033, जयपुर, राजस्थान, भारत

फोनः– 0141–2792919

ई–मेलः prayatnraj@yahoo.com

वेब पताः www.prayatn.org

लेखनः

राम प्रसाद जॉगिड़

सहयोगः

श्री देवेंन्द्र सिंह, श्री विष्णु जॉगिड़

संपादनः

श्री योगेश जैन

मार्गदर्शनः

श्री मलय कुमार

आर्थिक सहयोग

ओरेकल

प्रस्तावना

बालक राष्ट्र की अमूल्य निधि है। भारत भी अपनी नीतियां, योजनाएं, कार्यक्रम उसी अनुरूप तैयार कर लागू करता रहा है ताकि बालक देश का कर्तव्यनिष्ठ एवं सम्मानित नागरिक बन सके।हर क्षेत्र की नीतियों में चाहे वह स्वास्थ्य का क्षेत्र हो या शिक्षा का सबमें इसी बात को प्राथमिकता दी गई है।

शिक्षा नीति में भी इसी बात को प्राथमिकता दी गई है। देश में 6 से 14 आयु वर्ग के हर बालक के लिए प्राथमिक शिक्षा को अनिवार्य बनाकर इसे बच्चों के अधिकार से जोडा गया है जिसके लिए देश की सरकार कटिबद्ध एवं प्रतिबद्ध है।

इस दृष्टि से बारां जिले की सहरिया जन जाति उक्त शिक्षा नीति का समुचित लाभ नहीं उठा पा रही है। सामान्यतया इस जन जाति की प्रौढ जनसंख्या आज भी निरक्षर है।अभी भी इस जन जाति में साक्षरता का प्रतिशत केवल 34.18 है। महिलाओं में तो साक्षरता का प्रतिशत मात्र 18.7 है।

अगर इस जन जाति के शिक्षा के स्तर को देखा जाये ता 93.1 प्रतिशत जनसंख्या प्राथमिक शिक्षा के आगे नहीं बढ पाती है। इस जन जाति में शिक्षा को बढावा देने के लिए राज्य सरकार की ढेरों योजनाओ (ग्राम स्तर पर प्राथमिक शिक्षा के लिए मॉ बाडी केन्द्र, उच्च स्तर के लिए आवासीय विद्यालय तथा छात्रवृति इत्यादि) का संचालन कर रही है। इसके बावजूद भी 12 वर्ष का सहरिया समुदाय का बच्चा मुश्किल से अपनी विद्यालयी शिक्षा पूरी कर पाता है।

प्रयत्न का काम करते हुए यह अनुभव रहा कि जिस कार्यक्रम के साथ समुदाय का जुडाव होता है तो उस कार्यक्रम की सफलता का प्रतिशत बढ जाता है। इस जन जाति के समुदाय के साथ भी काम करते हुए यही पाया कि जागरुकता, जानकारी, सहभागिता एवं दक्षता के अभाव में राज्य की किसी भी कल्याणकारी योजना का यह समुदाय लाभ नहीं उठा पाता है।

बच्चों की शिक्षा के क्षेत्र में भी यही परिस्थिति देखी गई है। राज्य सरकार की तरफ से हर तरह की सुविधा के बावजूद भी अपेक्षित परिणाम नहीं आ पा रहे है।

उक्त स्थिति में बदलाव के लिए प्रयत्न ने एक प्रयास सहरिया समुदाय के साथ मिल कर शुरु किया है जिसके आशातीत अनुभव आये हैं, सहरिया समुदाय का अपने बच्चों की प्राथमिक शिक्षा के लिए जुडाव एवं जिम्मदारी के क्षेत्र में आशा की किरण दिखाई दी है।

सफलता चाहे घडे के लिए पानी की एक बूंद या ऊँट के मुंह में जीरा साबित हो लेकिन यह आशा की किरण एक वृहद प्रकाश की तरफ इंगित करती है।

यह प्रयास क्या है? क्या यह प्रयास सही मायने में हर बच्चे को अनिवार्य गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के ध्येय की दिशा में मील के पत्थर की तरह रास्ता दिखाता है? यही सब जानने एवं समझने के लिए यह दस्तावेज **प्रभात की किरण** तैयार किया गया है।

इस विस्तृत अनुभव को लिपिबद्ध करने का दुर्गम कार्य संस्था अनुसंधान एवं प्रलेखन प्रकोष्ठ के वरिष्ठतम सदस्य श्री राम प्रसाद जॉगिड़ द्वारा किया गया है। उन्होंने अपने चार दशक के अनुभव के आधार पर जिस मेहनत और कुशलता से दस्तावेज को तैयार किया है वह अत्यधिक प्रशंसनीय है।

आशा करते हैं श्री जॉगिड़ एवं प्रकाशन में भागीदार समस्त कार्यकर्ताओं का यह प्रयास इस विषय पर काम एवं चिंतन करने वालों के लिए बहुमूल्य साबित होगा।

प्रयत्न द्वारा किये जा रहे इस प्रयास के लिए ओरेकल (ORACLE) संस्था द्वारा सहयोग दिया गया है।

हम इनका हार्दिक आभार प्रकट करते हैं।

धन्यवाद।

मलय कुमार

(सचिव)

प्रयत्न संस्था

आभार

बदलाव की जंग कभी भी एकतरफा नहीं लडी जा सकती, मानव जीवन में बदलाव की जंग तो बिलकुल असंभव है। प्रयत्न के प्रयास इसी दिशा में रहे है और सतत हैं। प्रयत्न की रणनीति स्पष्ट है कि जिस समुदाय में बदलाव की जरुरत है उस बदलाव की जरुरत को पहले समुदाय महसूस करे और बदलाव के लिए पहल में अपनी भागीदारी करे।

शाहाबाद, बारॉ, राजस्थान में रह रही सहरिया जन जाति की अपने बच्चों को गुणवत्तापूर्ण समावेशी शिक्षा से जोडने की लडाई भी इसी तरह की रही है और सतत जारी है। इस समुदाय के साथ काम करते हुए यह पाया कि बच्चा एवं बच्चे के समुचित लालन पालन तथा उसकी शिक्षा दीक्षा समुदाय की प्राथमिकता नहीं है। वह प्रत्यक्ष लाभ की ही बात करता है और उसी पर ध्यान देता है।

ऐसी परिस्थिति में प्रयत्न ने प्रयास शुरु किये। समुदाय ने अपने बच्चों को गुणवत्तापूर्ण समावेशी शिक्षा से जोडने, इसमें आ रही बाधाओं का निराकरण करने में पहल की जिसके परिणाम एवं अनुभव एक आशा की किरण दिखाते हैं। इन्हीं अनुभवों एवं छोटे छोटे परिणामों को इस दस्तावेज **प्रभात की किरण** में पिरोया है।

हम समाज के उन सभी अंगों का अभार प्रकट करना चाहेंगे जिनका सहयोग हमें इस प्रयास को सफलता की तरफ ले जाने में मिल रहा है। विशेष रूप से हम धन्यवाद देना चाहते है सहरिया समुदाय को जिसने अपने पूर्वाग्रहों को छोडकर हर बच्चे को शिक्षा से जोडने एवं नियमित रखने के लिए कटिबद्ध दिखाई दे रहा है।

हम उन बच्चों का भी धन्यवाद ज्ञापित करना चाहेंगे जो विद्यालय एवं पढाई का नाम सुनकर इधर उधर भागते थे आज अपने मन से नियमित विद्यालय जा रहे हैं।

हम विशेष धन्यवाद देना चाहेंगे उन सभी अध्यापक महानुभावों एवं शिक्षा विभाग का जो कंधे से कंधा मिलाकर इस पुनीत मिशन में सहयांग कर रहे है।

हम धन्यवाद ज्ञापित करना चाहते हैं मॉ बाडी कार्यकर्ताओं, पंचायती राज प्रतिनिधियों, अन्य जन प्रतिनिधियों, शाला प्रबंधन समितियों तथा स्थानीय सेवा प्रदाताओं का जो इस प्रक्रिया में प्रशंसनीय भूमिका निभा रहे हैं।

हम ओरेकल (ORACLE) का आभार प्रकट करने के लिए भी इस अवसर का लाभ उठाना चाहेंगे जो इस पूरे प्रयास को वित्तीय, तकनीकी सहयोग एवं सतत मार्गदर्शन प्रदान कर कार्यकर्ताओं का मनोबल बढाने में अत्यंत महत्वपूर्ण योगदान दे रही है। हम ओरेकल का आभार व्यक्त करते हैं।

कार्यकर्ता किसी भी कार्यक्रम की रीढ की हड्डी होते हैं। हम इस कार्यक्रम से जुडे प्रयत्न के कार्यकर्ता श्री राम खिलाडी पोषवाल, श्री शिव नारायण तिवारी, श्री देवेंन्द्र सिंह, श्री विष्णु जॉगिड़, श्री शानू खान, श्री अनार सिंह, श्री हरिसिंह, का आभार व्यक्त करते हैं जिन्होने इस कोशिश की मजबूत आधार शिला रखकर आगे बढा रहे हैं।

प्रयत्न संस्था कार्यालय स्तर पर व्यवस्थापक टीम के सदस्य श्री दिलीप कुमार, श्री राकेश एवं श्री गंगाराम को भी भूला नहीं जा सकता। इनका भी आभार।

मैं इस अवसर पर संस्था सचिव श्री मलय कुमार जी का विशेष आभार प्रकट किये बिना नहीं रह सकता जिनका इस दस्तावेज प्रलेखन के लिए मुझ पर विश्वास, दृढ इच्छा शक्ति एवं कुशल नेतृत्व की वजह से ही इस दस्तावेज का प्रलेखन संभव हो पाया।

हम श्री योगेश जैन का भी आभार प्रकट करते हैं जिन्होंने क्षेत्र में काम के अनुभवों को संपादन कर लिपिबद्ध करवाने में इस प्रकाशन में सहयोग किया। एक बार पुनः सभी का आभार और साथ में आप सभी पाठकों का हार्दिक अभिनन्दन।

राम प्रसाद जॉगिड़

सदस्य, अनुसंधान एवं प्रलेखन प्रकोष्ठ

प्रयत्न संस्था

गुणवत्ता पूर्ण समावेशी शिक्षा के लिए सहरिया समुदाय के साथ प्रयास

सामुदायिक विकास या बदलाव के लिए काम करने में यह बात स्थापित है कि नेतृत्व की सफलता इसी में निहित है जब समुदाय खुद यह महसूस करे कि यह काम हमने किया।

इसी कार्य मंत्र के साथ प्रयतन का भी यह पक्का विश्वास है कि विकास या बदलाव की प्रक्रिया समुदाय को संगठित, दक्ष एवं सक्षम रूप में साथ आये बिना पूरी नहीं हो सकती। बदलाव या विकास की प्रक्रिया भी वही सही मानी जाती है जिसको समुदाय अपनाकर विकास कर्ता या बदलाव कर्ता की अनुपस्थिति में उसे आगे निरंतर रखे। कोई भी कार्यक्रम या परियोजना चिरस्थायी नहीं होती, समयबद्ध चलकर समाप्त हो जाती है। विकास के कार्यक्रम या बदलाव के कार्यक्रम की सफलता इसी में निहित है कि समुदाय को उसका लाभ चिरस्थायी मिले।

इसी मूल मंत्र के साथ बारॉ जिले की शाहाबाद तहसील में रह रहे सहरिया समुदाय के बच्चों के लिए गुएावत्तापूर्ण एवं समावेशी शिक्षा की सुनिश्चितता के लिए एक परियोजना को आकार दिया। जिसमें बच्चों की शिक्षा संबंधी समस्याओं के कारणों एवं प्रभावों को समझने, उनका विश्लेषण कर समाधान में स्वयं भागीदार बनने में समुदाय दक्ष एवं सक्षम बने और समाधान के लिए पहल करे।

इसी दृष्टि एवं उद्देश्य के साथ वर्ष 2017 में शाहाबाद के एक सीमित क्षेत्र (15 सहरिया बस्ती) में प्रयासों की शुरुआत की।

परियोजना क्षेत्र की भौगोलिक स्थितिः

बारॉ राजस्थान का सीमावर्ती जिला है जिसकी सीमा पर कोटा जिला (बारॉ जिला मुख्यालय बनने से पूर्व कोटा जिले का ही हिस्सा था) मध्यप्रदेश के शिवपुरी, गुना एवं श्योपुर स्थित है।

शाहाबाद बारॉ जिले का एक पंचायत समिति एवं तहसील मुख्यालय है।शाहाबाद तीन तरफ से मध्यप्रदेश की सीमा से सटा है। तहसील का ज्यादातर हिस्सा पहाडी है जो राजस्थान की अरावली श्रंखला के मध्य स्थित है और वनों से आच्छादित है जिसको स्थानीय भाषा में "डांग" कहा जाता है।

इसी "डांग" क्षेत्र में सहरिया समुदाय निवास करता है।

इन पहाडियों से काफी जल धाराएं प्रवाहित हैं जिससे इस क्षेत्र की पानी की जरुरतें पूरी होती हैं।

पंचायत समिति शाहाबाद का पूरा क्षेत्र दो भागों में बंटा है जिसे यहां "उपरेटी" एवं "तलहटी" के नाम से जाना जाता है। शाहाबाद कस्बा तलहटी क्षेत्र में स्थित है। "उपरेटी" क्षेत्र "तलहटी" क्षेत्र से अपेक्षाकृत सुदृढ स्थिति में है।

शाहाबाद एक छोटा कस्बा है जो 4 लेन राष्ट्रीय राज मार्ग 27 पर स्थित है। यह राजमार्ग राजस्थान में कोटा एवं बारॉ जिलों को मध्यप्रदेश के शिवपुरी एवं ग्वालियर जिलों को जोडता है।

शाहाबाद कस्बा शाहाबाद किले एवं जामा मस्जिद की वजह से भी जाना जाता है। राजमार्ग के अलावा यहां दूसरी सुविधाओं का अभाव है। (यथाः 24 घंटे एटीएम, पैट्रोल पंप, कुकिंग गैस ऐजेन्सी, माबाइल सेवाओं की सुविधायुक्त उपलब्धता इत्यादि)

तलहटी क्षेत्र में शाहाबाद से निकटतम दूसरा कस्बा देवरी है जो व्यापारिक दृष्टि से अपेक्षाकृत विकसित है।

इन ही सारी परिस्थियों में परियोजना प्रभात की शुरुआत हुई। काम ने गति पकडी। संलग्न केस स्टडीज परियोजना के परिणामों एवं अनुभवों का ही दस्तावेज है।

सहरिया समुदाय के बच्चों के लिए समावेशी शिक्षा – प्रभात परियोजना परिचय

प्रयत्न के क्षेत्र में काम करने के पूर्ववर्ती अनुभव यह सिखाने के लिए काफी थे कि सहरिया समुदाय के बच्चों के लिए समावेशी एवं गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा की सुनिश्चितता के लिए एक सघन प्रयास की जरुरत है जिसमें बच्चों की शिक्षा सम्बन्धी समस्याओं, कारणों एवं प्रभावों को समझने, उनका विश्लेषण कर समाधान में स्वयं भागीदार बनने में समुदाय दक्ष एवं सक्षम बने और समाधान के लिए पहल करे। सहरिया समुदाय के बच्चों की समावेशी एवं गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए प्रभात परियोजना को आकार दिया।

चूंकि काम मुश्किल एवं चुनौतीपूर्ण था इसलिए परियोजना का भौगोलिक विस्तार शाहाबाद की 15 सहरिया बस्तियों तक सीमिति रखा गया। परियोजना की वित्तीय मदद की जिम्मेदारी ओरेकल ने ली।

परियोजना का उद्देश्यः

बारां जिले की शाहाबाद तहसील के चयनित 15 सहरिया बस्तियों में बच्चों एवं उनके अधिकारों की सुरक्षा के लिए समुदाय आधारित व्यवस्थाओं एवं तंत्र का विकास करना ताकि चयनित बस्तियों मेंबच्चों की समावेशी एवं गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सुनिश्चित हो।

कार्यक्रम की पहुंचः

कार्यक्रम की पहुंच को केवल बाल अधिकारों तक ही सीमित न रखते हुए व्यापक स्तर पर सोचा गया जिसमें विशेष मुद्दा तो बच्चों की समावेशी एवं गुणवत्तापूर्ण शिक्षा ही होगा लेकिन इसके लिए कुछ विशेष पूरक गतिविधियां भी की जायेगी यथाः

1. 15 बस्तियों से जुडे राजकीय विद्यालयों एवं मॉ बाडियों के साथ तालमेल कर बच्चों की शिक्षा व्यवस्थाओं को सुदृढ करना एवं आवश्यकतानुसार इनके कर्मियों का उत्साहवर्धन तथा क्षमतावर्धन करना।
2. इन विद्यालयों एवं मॉ बाडियों के साथ बेहतर तालमेल एवं उनके संचालन में सहयोग।

सहरिया समुदायः

उद्भवः

सहरिया समुदाय राजस्थान के बारॉ जिले की दो तहसीलों किशन गढ एवं शाहाबाद में बसी हुई इस क्षेत्र की प्रमुख जनजाति है। इसके अलावा यह समुदाय बारॉ जिले की किशनगंज एवं शाहाबाद तहसीलों से सटे मध्यप्रदेश के पडौसी जिलों शिवपुरी एवं गुना में भी निवास करती है। सहरिया समुदाय के बारे में ऐसा कोई ऐतिहासिक दस्तावेज उपलब्ध नहीं है जिसमें इस समुदाय का उल्लेख हो।

समुदाय के बुजुर्गों एवं अन्य जानकारों के मुताबिक यह समुदाय रामायण कालीन "वाल्मिकी" एवं "शबरी" से अपना ताल्लुक बताते हैं, यह बात इससे भी पुख्ता होती है कि शाहाबाद से बारॉ मार्ग पर एक अन्य कस्बे केलवाड़ा में स्थानीय तीर्थस्थल "सीताबाड़ी" है, जिसकी इस समुदाय में बहुत मान्यता है। यह समुदाय अपने परिवार से जुड़े काफी धार्मिक कार्य वहीं संपन्न करवाते हैं।

मान्यता है कि सीता वनवास के समय लक्ष्मण ने सीता को यहीं जंगल में छोड़ा था और प्यास लगने पर यहीं बाण चलाकर जमीन से पानी की धार निकाली थी। आज भी यहां पानी के सोते पत्थरों से निकल कर विभिन्न कुण्डों से होते हुए एक छोटी नदी का रूप लेते हैं जिसे स्थानीय लोग बाणगंगा के नाम से पुकारते हैं।

आर्थिक स्थितिः

कालांतर में सहरिया समुदाय का जो भी इतिहास रहा हो लेकिन यह निश्चित है कि इस समुदाय का जीवन जंगल आधारित रहा है। जंगलों में उपलब्ध फल, शाक या शिकार से ही इस समुदाय की भोजन की आवश्यकताओं की पूर्ति होती रही है। रोज ताजा उपलब्या होने वाली एवं बची रहने पर खराब होने वाली खाद्य सामग्री की वजह से खाद्य सामग्री को बचा कर रखना या जमा करके भविष्य के लिए रखना आज भी इस समुदाय की आदत नहीं है।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद इस समुदाय को मुख्य धारा मे ं जोडने के लिए सरकार की तरफ से उन्हीं जंगलों में इस समुदाय को खेती के लिए जमीने, खेती करने के उपकरण इत्यादि उपलब्ध करवाये गये लेकिन खेती के प्रति इस समुदाय का विशेष रूझान नहीं बन पाया। शायद जंगल आधारित जीवन शैली, आदत एवं व्यवहार ही इस समुदाय को खेती से जोड़ने में बाधक रहा और इस आदत व्यवहार को बदलने के कोई प्रयास भी नहीं हुए।

स्हरिया समुदाय लघु वन उपज संग्रहण एवं मजदूरी पर ही आश्रित रहा। धीरे धीरे जंगलों में आई कमी के साथ लघु वन उपज की भी कमी होती चली गई। स्वयं की खेती करना कभी समुदाय की प्राथमिकता नहीं बन पाई और यह समुदाय पूर्णतया मजदूरी पर आश्रित हो गया।

जंगलों एवं जंगलों में उपलब्ध लघु वन उपज की कमी तथा स्थानीय मजदूरी की अनुपलब्धता के साथ साथ मजदूरी की मांग कम होने से मजदूरी के लिए अन्यत्र पलायन समुदाय के जीवन का एक अहंम हिस्सा बन गया जो आज भी बदस्तूर जारी है।

पलायन से परिवारों को होने वाली समस्याओं एवं उससे समुदाय के जीवन पर पड रहे प्रभावों का एक अलग सिलसिला है।

समुदाय में शराब सेवन का प्रचलन बहुतायत में है जिससे परिवार की आर्थिक स्थिति कभी भी सुदृढ नहीं रह पाती। आर्थिक नुकसान, अभाव, स्वास्थ्य की समस्यायें एवं परिवार में सौहार्द का नुकसान तो पूरा परिवार भुगतता ही है, साथ ही साथ बच्चों एवं महिलाओं के प्रति संवेदनशीलता भी नहीं रहती। धूम्रपान, गुटखा तम्बाकू के सेवन के अलावा जुए का भी प्रचलन है।

आजीविका के अभाव से जूझते समुदाय में जहां अनावश्यक खर्च(शराब, जुआ, गुटखा तम्बाकू) की परंपरा है वहीं समुदाय में बूते में नहीं होते हुए भी मृत्युभोज जैसी परंपराओं पर खर्च भी समुदाय को अभावों एवं गरीबी की तरफ धकेलता है।

सामाजिक एवं सांस्कृतिक स्थितिः

क्षेत्र में निवास करने वाले अन्य समुदायों के साथ इस समुदाय का कभी तालमेल नहीं रहा, उसका कारण कालांतर में जंगलों में अकेले रहते हुए आम समाज का हिस्सा कभी यह समुदाय नहीं बन पाया। आज भी सहरिया समुदाय की बस्तियां मुख्य गांव से अलग ही बसी हुई हैं जिनको आम समुदाय के लोग एवं स्वयं यह समुदाय **"सहराना"** बोलते हैं।

सरकार ने भी इस समुदाय को जो विभिन्न योजनाओं के अंतर्गत आवास बनाकर उपलब्ध करवाये वे भी मुख्य गांव से अलग हटकर ही उपलब्ध करवाये, अतिआवश्यक सुविधाओं एवं सेवाओं की उपलब्धता भी आवश्यकतानुसार नही के बराबर है यथा पीने का शुद्ध पेयजल, आने जाने के सुविधाजनक रास्ते एवं सड़क, बिजली इत्यादि।

आवश्यक सेवाओ (शिक्षा, स्वास्थ्य) तक भी समुदाय की पहुंच सहज नहीं है, यद्यपि इन सेवाओं के वैकल्पिक प्रयास (मिनी आंगनबाडी, मॉ बाडी) अवश्य हुए हैं लेकिन इन सेवाओं के लाभ की सुनिश्चितता का अभाव अभी भी बना हुआ है।

सहरिया समुदाय की परंपराएं या रीति रिवाज, तीज त्यौंहार आम समाज की तरह ही है। यह समुदाय भी हिन्दु देवी देवताओं को ही मानता है एवं उसी प्रकार उनके उत्सव वगैरह मनाता है यथा नवरात्रि, गणेश स्थापना, यज्ञ–हवन तथा कथा इत्यादि।

समुदाय में शादी ब्याह आम समुदायों की तरह ही होते हैं जिनको गांव में इस समुदाय के स्थापित पटेल संपन्न करवाते हैं। दहेज का प्रचलन विशेष नहीं है। परंपरागत बरतन इत्यादि ही दिये जाते हैं। समुदाय में बाल विवाह का प्रचलन है। यह परंपरा भी है कि शादी होने के बाद लडके को अलग कर दिया जाता है।

शैक्षिक स्थितिः

सामान्यतया इस जन जाति की प्रौढ जनसंख्या आज भी निरक्षर है।अभी भी इस जन जाति में साक्षरता का प्रतिशत केवल 34.18 है। महिलाओं में तो साक्षरता का प्रतिशत मात्र 18.7 है।`

इस जन जाति में शिक्षा को बढावा देने के लिए राज्य सरकार की ढेरों योजनाओ (ग्राम स्तर पर प्राथमिक शिक्षा के लिए मॉ बाडी केन्द्र, उच्च स्तर के लिए आवासीय विद्यालय तथा छात्रवृति इत्यादि) का संचालन कर रही है। इसके बावजूद भी सहरिया समुदाय के 6 से 14 वर्ष के आयु वर्ग के बच्चों को प्राथमिक शिक्षा का पूरा लाभ नहीं मिल पाता है।इस स्थिति के कारण जो समझ में आाते हैं वे इस प्रकार हैंः

- समुदाय में कुपोषण की वजह से बच्चों की सीखने की गति का धीमापन।
- अभिभावकों का वर्ष में 2 बार मजदूरी के लिए पलायन के कारण बच्चों का मॉ बाडियों एवं विद्यालयों से अनियमित हो जाना जिससे उम्रवार कक्षा का स्तर प्राप्त नहीं कर पाना और धीरे धीरे विद्यालय छोड देना।
- मॉ बाडी जो इस समुदाय के बच्चों की शिक्षा के लिए नींव है वहां के कर्मियों का शिक्षा का स्तर कम तथा उनका शिक्षा के क्षेत्र में अप्रशिक्षित होना।
- अभिभावकों की अपने बच्चों की शिक्षा के प्रति उदासीनता जिससे बच्चे को अपनी शिक्षा के लिए परिवार का सहयोग नहीं मिल पाना।

राजनैतिक स्थितिः

समुदाय में ग्राम स्तर पर पटेल परंपरा के अलावा कोई स्थापित नेतृत्व नहीं है जो इस समुदाय को दिशा दे सके। समुदाय का अपना कोई संगठन भी नही है जो समुदाय की आवाज बन सके। आरक्षण एवं बहुमत की वजह से स्थानीय पंचायती राज में अवश्य इस समुदाय का प्रतिनिधित्व नजर आता है लेकिन आवश्यक शिक्षा, जागृति एवं जानकारियों के अभाव में प्रतिनिधित्व होते हुए भी प्रशासन पर आश्रितता स्पष्ट नजर आती है।

स्वास्थ्य एवं पोषणः

पूरे देश में रह रही जन जातियों में से सबसे ज्यादा कुपोषण सहरिया समुदाय में पाया जाता है।

इस स्थिति का मुख्य कारण जहां समुदाय में जागृति, जानकारी एवं बच्चों के प्रति असंवेदनशीलता हैं वहीं स्वास्थ्य के संबंध मे सरकारी विभागों द्वारा स्वच्छ पेयजल, स्वच्छता, पोषण एवं स्वास्थ्य रक्षा के लिए किए गए प्रयासों का प्रभाव भी नगण्य साबित होता है।

जागरुकता के अभाव में समुदाय की अस्वच्छता की स्थितियों में रहने की आदतों का भी उक्त स्थिति को बनाने में योगदान है। यद्यपि घर गांव में पानी की पर्याप्त सुविधा नहीं है लेकिन वर्ष में ज्यादातर समय आसपास पानी की प्रचुर मात्रा में उपलब्धता होने के बावजूद भी समुदाय के लोगों में नहाने की आदत नहीं है, यहां तक की गर्मी के मौसम तक में भी यही स्थिति देखी जाती है, जो उनके चेहरों, बिना तेल कंघी किये बालों एवं कपडों से साफ झलकता है। दूसरे समुदाय के लोगों द्वारा इस समुदाय के लोगों से दूरी बनाये रखने का एक यह भी महत्वपूर्ण कारण है।

परिवार के लोगों में बीमारी का एक कारण ऐसी ही अस्वास्थ्यकर स्थितियां हैं। डायरिया की बीमारी लोगों में सामान्य है और यह भी अन्य कारणें के अलावा समुदाय में कुपोषण का एक महत्वपूर्ण कारण है।

सरकार की पोषण, खाद्य सुरक्षा एवं स्वास्थ्य संबंधी तमाम तरह की सुविधाओं का लाभ भी जागरुकता एवं जानकारियों के अभाव में समुदाय नहीं ले पाता।

उक्त स्थितियों के अलावा समुदाय में कालांतर से चली आ रही सोच, मान्यताएं एवं विश्वास भी इन स्थितियों को बरकरार रखने में मददगार साबित हुए हैं।

1

कुछ तो करना ही पड़ेगा...

शाम होने को थी। लोग मजदूरी करके अपने घरों को लौट रहे थे। ज्यादातर महिलायें थी। दिन की मजदूरी का काम तो पूरा हो गया था लेकिन घर के कामों की चिंता थी। अतः सारी महिलायें इसी तरह की चर्चायें करती हुई जल्दी जल्दी घरों की तरफ बढ रही थी।किसी को पानी लाना था, किसी को घर के चूल्हे के लिये ईंधन जुटाना था, किसी को छोटे बच्चे की भूख की चिंता थी। बातें करते करते गांव में घुसने का रास्ता आ चुका था।

रास्ते पर गांव के ही तीन लोग शराब पीकर पड़े थे, गालियां बक रहे थे। काम से लौट रही महिलाओं के लिये यह कोई नई बात नहीं थी, यह सब देखना झेलना रोजाना की नियति थी। महिलाओं को देखकर ज्यादा इतराये, उनके साथ दुर्व्यवहार भी करने लगे। महिलाओं ने ध्यान नहीं दिया, रास्ते को टाल कर अपने घरों की तरफ बढ गई।

आज रामो बाई से नहीं रहा गया। आगे जाकर महिलाओं को रोका एवं कहने लगी, शराब की बात अगर रास्ते तक ही सीमित होती तो फिर भी कोई बात नहीं थी, ये लोग तो घर पहुंच कर भी शांति से नहीं रहते, हम लोगों को गाली बकना, पिटाई करना, बच्चों को गालियां बकना, शराब के लिये पैसों की छीना झपटी, नही देने पर बच्चों की और हमारी पिटाई करना इनका रोज का काम है। कब तक सहेंगे, कब तक हम और हमारे बच्चे भूखे रहेंगे।ऐसे भूखे बच्चों का भविष्य क्या होगा?

सभी महिलायें घर की चिंता छोड़ रामो बाई की बातों को ध्यान से सुन रही थी। भबूती एवं, गुड्डी ने भी रामो बाई की बातों का समर्थन किया, साथ ही यह भी तय किया कि इस परेशानी से छुटकारा पाने के लिये अब तो कुछ करना ही पड़ेगा।

अरे! हमरे वास्ते भी नहीं तो मोड़ा मोड़िन के वास्ते तो कछु करनो पड़ेगो। (अरे, अपने स्वयं के लिये नही तो इन बच्चे बच्चियों के लिये तो कुछ करना ही पड़ेगा) आज तो सीमा भी बोल पड़ी थी, कब तक केवल बैठकें एवं बैठकों में बात ही करते रहेंगे।

सीमा जामवंत बन गई थी महिलाओं के लिये।(रामायण काल में हनुमान जी को सीता खोज के लिये तथा लंका दहन के के लिये प्रेरित करने वाले जामवंत ही थे।)रात को दुबारा बात करने के लिये चुपके से वापस मिलने का तय कर सब अपने अपने घरों की तरफ बढ गई।

पिछले दिनों से गांव में बच्चों के हितों की बातचीत का माहौल है। बच्चों की सुरक्षा के लिये गांव में एक गांव वालों ने समुदाय के सक्रिय लोगों की बाल सुरक्षा समिति भी गठित की है।बच्चों की सुरक्षा के साथ साथ उनकी गुणवत्ता पूर्ण एवं बच्चे की आयु के अनुसार शिक्षा के स्तर पर जोर है।

रामो बाई, भबूती, सीमा, गुड्डी इस समिति की सक्रिय सदस्य हैं,समिति के सदस्यों के लिये आयोजित प्रशिक्षण कार्यशालाओं में भी भाग ले चुकी हैं।

प्रशिक्षण कार्यशालाओं में सहरियाओं की स्थिति, गरीबी, बच्चों के अधिकार, बच्चों की गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, बच्चों में कुपोषण, कुपोषण के कारण एवं प्रभाव, सरकारी योजनायें तथा उनके लाभ इत्यादि पर खूब बातें हुई हैं। अधिकार प्राप्त करने तथा सरकारी योजनाओं से लाभ लेने के तरीके भी सीखे हैं।

शायद सीमा ने आज उसी बात को याद दिलाया था कि कब तक चुप रहेंगे, अब तो इन समस्याओं के समाधान निकालने का समय आ गया है, जो हमें ही करना है दूसरा कोई नहीं करेगा।

28 परिवारों की यह बस्ती ग्राम पंचायत कस्बा नोनेरा, पंचायत समिति शाहाबाद, जिला बारां, जिला मुख्यालय से कोटा–शिवपुरी मुख्य मार्ग पर शाहाबाद से दक्षिण दिशा में 102 किलो मीटर दूर बसी है। पंचायत समिति मुख्यालय से बस्ती की दूरी 20 किलो मीटर है तथा पंचायत मुख्यालय कस्बा नोनेरा से 6 किलोमीटर दूर बसी है।

मजदूरी, लघु वन उपज ही इन लोगों का मुख्य आजीविका का साधन है। इसके लिये भी इन लोगों को समय समय पर पलायन करना पड़ता है। शराब सेवन इस समुदाय की परंपरा एवं कमजोरी रही है।

इस समुदाय में गरीबी, बच्चों में कुपोषण के कारणों की जड़ में भी मुख्य रूप से शराब सेवन है जिसकी वजह से घर में हमेशा अभाव, बच्चों व महिलाओं पर ध्यान न दे पाना, कमाई का ज्यादातर हिस्सा शराब की भेंट चढ जाता हैं। समुदाय की इस शराब सेवन की कमजोरी का फायदा शराब के ठेकेदार या शराब माफिया भी भरपूर उठाते हैं। ठेके के अलावा हर सहरिया बस्ती में स्थानीय लोगों की मदद से शराब 24 घंटे उपलब्ध हो जाती है।

मंडी सहजना की भी यही समस्या है,जिसको लेकर महिलायें परेशान हैं और गांव में बिक रही अवैध शराब के खिलाफ कार्यवाही करने की बात कर रही हैं।

सभी महिलाओं ने तय किया था कि आने वाली बाल सुरक्षा समिति की बैठक में हम सभी शामिल होंगी और बस्ती मे शराब एवं ताश के चलन को बंद करने के लिए अपनी बात रखेंगी।

आज की बाल सुरक्षा समिति की नियमित बैठक में सदस्यों के अलावा गांव की अन्य महिलाओं की संख्या भी काफी थी, समिति के उपस्थित सदस्य भी यह सब देखकर असहज से हो गये, सोच रहे थे कभी तो बार बार बुलाने पर भी महिलाएं बैठकों में नहीं आती हैं, आज सब इकट्ठी आने के पीछे क्या कारण हो सकता है?

सभी ने पहले महिलाओं को अपनी बात रखने का तय किया। महिलाओं में से पहले सीमा ने महिलाओं की तरफ से बात रखी कि बच्चों की पढाई, उनका खानपान, लालन पालन अत्यंत जरुरी है, हम भी मॉए हैं, बच्चों की तकलीफ आप लोगों से ज्यादा हमको होती है लेकिन कभी सोचा है कि बच्चों के हित की बात करने वाले आप लोग उनके हिस्से की तो शराब पी जाते हो बच्चों का भला कैसे होगा?

काफी गंभीर बात थी, जो महिलाओं ने कहा उस कृत्य के समुदाय के सभी पुरुष भागीदार थे। एक बार तो बैठक में सन्नाटा सा छा गया।

इसी बीच भभूति ने फिर चुप्पी तौडी। हम आज इकट्ठी इसीलिए आई हैं कि बस्ती में शराब पीना और बिकना बंद हो और इसके लिए समुदाय की कोई व्यवस्था बने एवं उस व्यवस्था का पालन पूरी बस्ती के लोग करें।

महिलाओं की बात सुनकर सभी ने तय किया कि दो दिन बाद पूरे समुदाय की बैठक बुलाकर इस पर निर्णय किया जायेगा। यह सूचना सभी परिवारों तक पडौसी पहुंचा दें साथ ही यह भी तय किया कि इस बैठक में कोई भी परिवार अनुपस्थित न रहे तथा यह भी सूचना दी गई कि उस दिन समुदाय का कोई भी सदस्य शराब नहीं पियेगा और शराब पीकर बैठक में शामिल नहीं होगा।महिलाएं खुश थी उन्हे लगा कि हमारी लडाई की यह पहली जीत है।

बाल सुरक्षा समिति ने नियत दिन पूरे समुदाय की बैठक बुलाई तथा महिलाओं द्वारा उठाये गये मुद्दे से अवगत करवाया। विचार विमर्श हुआ, समुदाय में शराब के आदी लोग दबी जुबान से इस व्यवस्था का विरोध भी किया लेकिन समुदाय ने विशेषकर महिलाओं ने तय कर लिया था कि मंडी सहजना में शराब पीना और बिकना तो आज ही से बंद होगा।

बाल सुरक्षा समिति ने भी गांव समुदाय से बात कर एक व्यवस्था बनाई जिसको पूरे समुदाय ने स्वीकार किया एवं सहमति के हस्ताक्षर किये।

1. अगर कोई भी व्यक्ति गांव में लाकर शराब बेचता पाया गया पहली बार में उसको समुदाय को 1100 एक हजार एक सौ रूपये का आर्थिक दण्ड देना पड़ेगा।
2. इसके बावजूद भी दुबारा अगर वह ऐसा करेगा तो उस पर कानूनी कार्यवाही की जायेगी और समुदाय उसका बहिष्कार करेगा।
3. शराब पीने वाले पर भी यही नियम लागू होगा, पहली बार में समझाइश के साथ 1100 एक हजार एक सौ रूपये का आर्थिक दण्ड लिया जायेगा।
4. दूसरी बार भी अगर कोई नियम की पालना नहीं करता है तो उसका समुदाय से बहिष्कार किया जायेगा साथ ही जरुरी हुआ तो कानूनी कार्यवाही भी की जायेगी।

अभी तो शराब मुक्त है मण्डी सहजना।

2

अगर नहीं मानते हो तो कल से घर मत आना.....

आज रघुवर विद्यालय से छुट्टी होने एवं खेलने के बाद जब घर के लिए रवाना हुआ तो उसे थोडी देरी हो गई थी, सोच रहा था आज तो देरी होने के कारण मम्मी पापा की डांट खानी पडेगी।

लेकिन यह क्या जब घर पहुंचा तो कहां तो रघुवर मम्मी पापा की डांट से डर रहा था वहां तो मम्मी पापा स्वयं ही झगड रहे थे। रघुवर को समझते देर नहीं लगी कि मम्मी ने जो पैसे घर में सामान लाने के लिए पापा को दिये थे, उन पैसों का सामान लाने के बजाय पैसों को ताश में लगा दिये और शराब भी पी आये।

वैसे रघुवर के लिए यह कोई नई बात नहीं थी, इसी तरह शराब इत्यादि को लेकर छोटी मोटी तकरार तो रोज का काम था और रघुवर घर के इस माहौल का जैसे आदी हो चुका था। लेकिन आज कुछ बात ज्यादा ही बढी लग रही थी। मॉ के आंखों में आंसू थे और पापा बोलने या जवाब देने के बजाय इधर उधर लुढक से रहे थे। मॉ बराबर कहे जा रही थी कि अगर अपनी आदत नहीं सुधारते तो कल से घर में आना ही नहीं।

रघुवर आज गंभीरता से सोच रहा था ऐसा क्यों होता है ? यह सब मेरे यहां ही होता है या दूसरे बच्चों के घरों में भी ऐसा ही होता होगा क्या? इसी उधेडबुन में जैसे तैसे खाना खाकर सो गया लेकिन सुबह उठा तो घर में तो सब रोज की तरह ही काम हो रहा था लेकिन कल रात की घटना रघुवर को रह रह कर याद आ रही थी।

ऐसे ही सोचते सोचते खाना खाकर विद्यालय भी चला गया, रात को घर में मम्मी पापा के झगडे एवं पापा की जो हालत देखी थी उसको वह भूल नहीं पा रहा था।रघुवर के अन्य दोस्त भी विद्यालय आ चुके थे। एक ने आते ही रघुवर के पीठ में हाथ की मारते हुए कहा क्यों भाई आज इतना गंभीर कैसे हो रहा है? रघुवर ने सारा किस्सा विस्तार से बताया तो सभी कहने लगे कि इसमें इतना गंभीर होने क्या बात है, यह तो रोज के किस्से हैं और सबके घरों मे होते हैं।

यह तो गलत बात है न अगर हमें घर में अच्छा माहौल नहीं मिलेगा तो हम कैसे पढ पायेंगे? रघुवर की बात ने सभी को गंभीर बना दिया। एक दोस्त ने इस बात का समर्थन करते हुए कहा आज की बाल मंच की बैठक में इस बात पर हमें चर्चा करनी चाहिए ताकि कोई रास्ता निकल सके।

विद्यालय की छुट्टी होने के बाद सभी बच्चे सीधे बाल मंच की बैठक में पहुंचे। बाल मंच की बैठक सामान्यतया विद्यालय की छुट्टी होने के बाद ही आयोजित होती है।

बाल मंच में इस पर विस्तार से चर्चा एवं विश्लेषण के बाद बडो की बैठक(बाल सुरक्षा समिति) में आज ही रखने का तय किया इसके लिए रघुवर एवं चार बच्चों को जिम्मेदारी दी गई जिसमें दो लडकियां भी शामिल थी।

बडों ने बच्चों की बात को पहले सुना। बाल सुरक्षा समिति की महिला सदस्यों ने बच्चों की बात का जोरदार समर्थन करते हुए इसका समाधान निकालने की जरुरत को रेखांकित किया। पुरुष सदस्य भी

इससे असहमत नहीं थे बल्कि उन्होने भी बच्चों एवं महिलाओं के प्रस्ताव को स्वीकार करते हुए जितना जल्दी हो सके पूरे समुदाय की बैठक आयोजित कर शराब व ताश की रोकथाम की समुदाय आधारित व्यवस्था बनाना तय किया। समुदाय से मिलकर बैठक का दिन और जगह करवाने की दो सदस्यों ने जिम्मेदारी ली।

तय समय व जगह पर पूरा समुदाय इकट्ठा हुआ। विषय गंभीर भी था और न्यूनाधिक रूप से पूरा समुदाय ही लोगों की इस आदत से परेशान था, प्रभावित था, समुदाय की बदनामी भी हो रही थी और बच्चे एवं महिलाएं इससे ज्यादा प्रभावित हो रहे थे जिससे पूरा पारिवारिक एवं सामुदायिक ढॉचा चरमरा रहा था। इसको पूरे समुदाय ने महसूस किया।

इसे बंद करने व गांव में इसकी सामुदायिक व्यवस्था बनाकर निगरानी करने का महिलाओं एवं बच्चों ने पुरजोर समर्थन किया। समर्थन तो पुरुषों ने भी किया लेकिन जो इस नशे एवं जुआ की लत के शिकार थे वे इधर उधर फुसफुसा रहे थे।

आखिर समुदाय ने इसको बंद करने के लिए अपनी बस्ती के लिए सामुदायिक व्यवस्था कायम की जिसको लिखित में लेकर पूरे समुदाय के सहमति के हस्ताक्षर करवाये गये।

1. समुदाय का कोई भी व्यक्ति शराब पियेगा और जुआ खेलेगा तो उसको 5,000रु. का जुर्माना समुदाय में जमा करवाना पडेगा।
2. दूसरी बार भी व्यक्ति ऐसा करता है तो उसका जुर्माने के साथ साथ सामाजिक बहिष्कार किया जायेगा।

यह गांव है मुण्डियर की गंगापुर सहराना बस्ती। गंगापुर सहराना बस्ती ब्लॉक शाहाबाद से 10 किलोमीटर दूर एवं जिला मुख्यालय से 70 किमी दूर कोटा शिवपुरी नेशनल हाइवे 27 पर बसी है। आवागमन के लिए मुंडियर से बस्ती तक पक्की सडक की व्यवस्था है। इस गांव मे सहरिया समुदाय के 160 परिवार निवास करतें है।

अभी यह बस्ती शराब व जुआ मुक्त है।

3

थोडी देर बाद कुत्ते चाटेंगे और भी कुछ कर सकते हैं.....

आज बंटी, रमेश, धर्मेन्द्र तथा पांच छः दोस्तों ने विद्यालय की छुट्टी होने के बाद घर जाकर कुछ खा पीने के बाद मुख्य सडक पर घूमने जाना तय किया। सभी अपनी योजना अनुसार घरों से निकल कर मुख्य सडक पर आकर बातें करते हुए सडक पर चलते जा रहे थे। बातें करते एवं चलते चलते शाम हो गई, थोडे समय में अंधेरा होने को था, अंधेरा पूरी तरह से हुआ नहीं था। सभी अपनी बातों में मस्त थे।

सभी ने अपने घर पर भी बता दिया था कि आज वे सब मिलकर सडक पर थोडा घूमने निकलेंगे, लौटने में थोडी देरी भी हो सकती है इसलिए चिंता नहीं करें।

अचानक धर्मेन्द्र ने सभी दोस्तों को सडक के किनारे एक पेड की तरफ इशारा कर देखने को कहा। सभी उस पेड की तरफ देखने लगे। दो मोटर साइकिल रोड के किनारे खडी थी, चार पांच जने वहीं उस पेडं के नीचे बैठे दिखाई दिये।क्या कर रहे थे? साफ नजर नहीं आ रहा था क्योंकि बच्चे थोडी दूर पर थे और अंधेरा होना थोडा थोडा शुरु हो चुका था।

बच्चे तो बच्चे ही ठहरे, बंटी ने कहा नजदीक चलकर देखते हैं क्या कर रहे है? रमेश ने मना किया हमें क्या करना है वे कुछ भी करें चलो हम तो लौट चलते हैं। दो जनों ने रमेश की बात से सहमति जताई, लेकिन बाकी उस माजरे को देखना चाह रहे थे।

आखिर सब उस तरफ चल दिये और थोडी दूर पर एक दूसरे पेड के नीचे खडे रहकर उधर देखने लगे। देखा एक जना खडे होने की कोशिश कर रहा है लेकिन खडा नहीं हुआ जा रहा है। दूसरे ने उसको एक भद्दी सी गाली देकर खडे होने के लिए कहा, एक जना तो साफ लेटा हुआ था वह उठकर बैठने की कोशिश कर रहा था लेकिन जैसे ही उठने की कोशिश करता वापस गिर पडता।

वह पडे पडे सबको ही भद्दी गालियां दे रहा था तथा कह रहा था मेरे मना करने पर भी मुझे आखिर तुम लोगों ने ज्यादा पिला ही दी तुम्हें तो मै देख लूंगा। इस बीच वह थोडा बैठा भी लेकिन वापस लुढक गया।

बच्चों को समझ आ गया था कि ये लोग दारु पी रहे हैं और टुन्न हैं इसलिए कुछ नहीं करेंगे। बच्चे नजदीक चले गये।इतने बच्चों को एक साथ देख उनको खटका हुआ, ये इतने बच्चे इस समय यहां क्या कर रहे हैं? डराकर भगाने की कोशिश की लेकिन ठीक से बोला भी नहीं जा रहा था, बच्चों को भगाने वाला वापस लुढक गया।

बच्चों को शैतानी सूझी, कह रहे थे अभी तो बोलने में ही दिक्कत हो रही है थोडी देर बाद कुत्ते चाटेंगे साथ ही कुछ और भी कुछ कर सकते हैं। यह कहकर बच्चे वहां से भाग छूटे। बच्चों ने इतना देख लिया था कि वे सब उन्हीं के गांव के रहने वाले हैं।

आखिर में बच्चे आपस में जहां हंसी मजाक कर रहे थे, थोडे गंभीर होकर बात करने लगे। कहां हम हमारी बैठकों में भी और बडों की बैठकों में भी गांव को नशा मुक्त करते हुए बाल मित्रवत बनाने की बातें कर रहे हैं और हमारे ही गांव के लोगों की यह हालत है। देखते हैं कल बाल मंच में भी बात करते हैं तथा इस

मसले को बडों को भी बताते हैं। बात करते करते गांव आ गया था, सब बच्चे अपने अपने घर की तरफ चल दिये।

बाल मंच की बैठक में इस मसले (शाम को सडक पर शराब पीने वालों की स्थिति)पर बात करते हुए बच्चों ने तय किया कि इस बात को तो बडों को बतानी ही चाहिए। इसके लिए बंटी और धर्मेन्द्र को जिम्मेदारी दी कि वे दोनो आज होने वाली बाल सुरक्षा समिति की बैठक में शामिल होकर गांव में इस प्रकार जो लोग शराब पीते हैं ओर साथ ही साथ ताश जुआ भी खेलते हैं, इसके लिए बात करें और इन सब पर गांव में रोक लगाने के लिए प्रस्ताव रखें।

दोनों बाल मंच के सदस्य बच्चे बंटी एवं धर्मेन्द्र बाल सुरक्षा समिति की बैठक में पहुंचे। बैठक शुरु होने वाली थी, बच्चों को आया देखकर पहले बच्चों से बात की। बच्चों ने जो कल शाम को देखा था उसको विस्तार से बताया साथ ही यह भी बताया कि इसे बंद किया जाना चाहिए।

बाल सुरक्षा समिति की बैठक के आज के ऐजेंडे में वैसे भी इस विषय को शामिल किया हुआ था बच्चों से बात होने के बाद बाल सुरक्षा समिति में इस विषय पर गंभीरता से विचार विमर्श किया, विश्लेषण किया। इसके अलावा वर्तमान में आम सहरिया समुदाय में इस बुराई (शराब,ताश एवं जुआ) को समाप्त करने के लिए पूरे क्षेत्र में चल रहे प्रयास पर भी चर्चा की।

आखिर में इसकी बुराई, परिवार, महिलाओं एवं बच्चों पर होने वाले प्रभाव, सामाजिक बदनामी, आर्थिक नुकसान तथा गांव में पारिवारिक, सामाजिक वातावरण दूषित होने को ध्यान में रखते हुए इस बुराई पर गांव में पूर्णतया रोक लगाने का तय किया गया। इसके लिए ग्राम स्तर पर एक सामुदायिक व्यवस्था का भी निर्माण किया और उस पर गांव के पूरे समुदाय की सहमति के हस्ताक्षर करवाना तय किया।

व्यवस्थाः

- गांव में आज से शराब का सेवन, ताश जुआ पूर्णतया बंद है, जिसकी पालना गांव का पूरा सहरिया समुदाय करेगा।
- समुदाय का कोई व्यक्ति अगर इसके बावजूद भी इस कृत्य को करता है या शामिल होता है तो उसको प्रथम बार में समुदाय को 5,000 रूपये का दण्ड देना होगा।
- समझाइस एवं आर्थिक दण्ड देने के बाद भी समुदाय का कोई व्यक्ति अगर इस कृत्य को करता है या शामिल होता है तो उसको समुदाय से बहिष्कृत किया जायेगा और 5,000 रूपये का दण्ड भी देना होगा।

बांरा जिले की तहसील शाहाबाद का यह गांव सेमलीफाटक शाहाबाद ब्लॉक मुख्यालय से 30 किलोमीटर व ग्राम पंचायत मुख्यालय खटका से 5 किलो मीटर दूर बसा है। ब्लॉक मुख्यालय शाहाबाद सें सेमलीफाटक तक पक्की सडक है।

गांव सेमली फाटक में राजकीय उच्च प्राथतिक विद्यालय है। आंगन बाडी व मॉ बाडी की सुविधा भी है। गांव की सहरिया बस्ती में 112 सहरिया परिवार निवास करतें है। सहरिया समुदाय मुख्यतया खेंती एवं मजदूरी एवं मौसमी लघु वन उपज संग्रहण के कार्य पर निर्भर है। वर्तमान में सेमलीफाटक शराब, ताश जुआ मुक्त है।

4

गुरु तो आज भी अपने शिष्यों पर सब कुछ लुटा देने को तैयार हैं

सुनकर अजीब लगता है आज के वर्तमान समय में, मगर यह सच है और इसका अहसास करवाता है सेमली फाटक गांव का राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय एवं वहां मौजूद अध्यापक ।

बांरा जिले की तहसील शाहाबाद का यह गांव सेमलीफाटक शाहाबाद ब्लॉक मुख्यालय से 30 किलोमीटर व ग्राम पंचायत मुख्यालय खटका से 5 किलो मीटर दूर बसा है। ब्लॉक मुख्यालय शाहाबाद सें सेमलीफाटक तक पक्की सडक है।

गांव सेमली फाटक में राजकीय उच्च प्राथतिक विद्यालय है। आंगन बाडी व मॉ बाडी की सुविधा भी है।

गांव की सहरिया बस्ती में 112 सहरिया परिवार निवास करतें है। सहरिया समुदाय मुख्यतया खेंती एवं मजदूरी के कार्य पर निर्भर है।

क्षेत्र में बाल मित्रवत एवं गुणवत्तापूर्ण शिक्षा व्यवस्था के उद्देश्य से काम शुरु करने के लिए साथी जब राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय सेमलीफाटक पहुंचे तो लगा कि सेमली फाटक विद्यालय वर्तमान में देखे जा रहे अन्य गांवों के विद्यालयों से हटकर है।

साफ सुथरा विद्यालय प्रांगण, साफ सुथरे कक्षा कक्ष, कक्षाओं में व्यवस्थित बैठे बच्चे तथा तल्लीनता से अध्यापन कार्य करते शिक्षक। शकुन भी मिला और आशा की किरण का अहसास भी हुआ।

विद्यालय में संपर्क के लिए दोपहर के भोजनावकाश का समय ही चुना था ताकि बच्चों की पढाई में बाधा नहीं पहुंचे और अध्यापक दल से बातचीत हो सके।

आपसी अभिवादन, स्वागत परिचय के उपरांत चर्चा हुई, साथियों ने अपना आने का उद्देश्य एवं कार्यक्रम तथा संस्था के बारे में विस्तार से बताया। अध्यापकों के चेहरे की चमक बता रही थी कि वे भी शायद इसी तरह किसी सहयोगी संस्था या साथियों की तलाश में थें जो विद्यालय को बाल मित्रवत बनाने एवं बच्चों की गुणवत्तापूर्ण शिक्षा कार्य में सहयोग कर सके।

अध्यापकों ने अपनी भावना से भी साथियों को अवगत करवाया कि वे सभी लोग इस विद्यालय एवं विद्यालय में आने वाले बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तथा भयमुक्त वातावरण उपलब्ध करवाना चाहते हैं।

इसके लिए वे अभावग्रस्त बच्चों के लिए आपस में निजी आर्थिक सहयोग कर आवश्यक पाठ्य सामग्री एवं बच्चों के उत्साहवर्धन के लिए जूते मौजे इत्यादि तक भी उपलब्ध करवाते रहते हैं ताकि कोई बच्चा अपने को हीन न समझे और पढाई में रुचि ले। साथ ही विद्यालय की आवश्यक भौतिक सुविधाओं के लिए भी प्रयास रत रहते हैं।

इस प्रकार के अब तक किये गये सहयोग को भी साथियों के साथ साझा किया।

अध्यापकों के बच्चों एवं विद्यालय के प्रति इस समर्पण भाव को सुनकर साथी भी अभिभूत थे, आगे के प्रयासों के लिए तथा उद्देश्य की मंजिल तक पहुंचने के लिए जैसे सपाट रास्ता नजर आ रहा था।

विद्यालय में बच्चों के नामांकन, उपस्थिति एवं बच्चों की नियमितता पर चर्चा के दौरान अध्यापक गण मायूस हुए और इसी समस्या को इंगित किया कि हमारे तमाम प्रयासों के बावजूद यहां का समुदाय इस तरफ ध्यान नहीं दे रहा, समुदाय अपने बच्चों की शिक्षा, स्वास्थ्य एवं उनके भविष्य के प्रति गंभीर नहीं है।

साथियों ने भी समुदाय के साथ रहे अब तक के अपने अनुभवों को साझा किया और मिलकर इस समस्या के समाधान के लिए भी आपस में आश्वस्त किया।

साथियों ने अपने अगले सेमली फाटक गांव के परिभ्रमण के दौरान पाया कि विद्यालय में कक्षा कक्षों के रंग रोगन का काम चल रहा है तथा कक्षा कक्षों के लिए नई बेंचें भी आ गई हैं।

साथियों ने सोचा कि गुरु तो आज भी अपने शिष्यों पर सब कुछ लुटा देने को तैयार हैं।

शायद गांव के गत परिभ्रमण के दौरान साथियों से कार्यक्रम तथा संस्था के बारे में हुई बातचीत से अध्यापकों के मन को अतिरिक्त बल मिला था और स्वयं द्वारा तैयार योजना को जल्दी से जल्दी अमली जामा पहना रहे थे ताकि बाहर के साथी एवं समुदाय भी गांव के बाल मित्रवत विद्यालय तथा बच्चों की गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के सपने को पूरा करने में सहयोग करें।

5

मछली मुर्गा तो बाद में भी बेच लूँगा पहले पढाई करनी है.....

राजपुर शाहाबाद ब्लाक के बडे गांवों में से एक है। राजपुर मध्यप्रदेश के श्योपुर जिले की सीमा के अत्यंत नजदीक है। दोनों प्रदेशों की मिली जुली संस्कृति का अनुभव होता है। यह गांव श्योपुर को राष्ट्रीय राज मार्ग 27 से जोडने वाली श्योपुर मुण्डियर रोड पर शाहाबाद से 20 किलोमीटर दूर मुख्य सडक पर बसा है।

गांव में सभी समुदाय के लोग रहते हैं। आस पास के गांवो के लिए दैनिक उपयोग, खेती, खेती के औजार, ग्रामीण उपयोग का फर्नीचर एवं अन्य सामान इत्यादि के लिए भी इसी गांव में बाजार उपलब्ध है। इसी अनुसार आवश्यकतानुसार दूसरे कारोबार भी गांव में होते हैं।

गांव में राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, प्राथमिक विद्यालय, मॉ बाडी, आंगन बाडी, सहरिया समुदाय के बच्चों के लिए राजकीय छात्रावास की सुविधा है।

यहां सहरिया समुदाय की अलग से बसी बस्ती में इस समुदाय के 142 परिवार निवास करते हैं। शिक्षा के संसाधनों व्यवस्थाओं इत्यादि को देखते हुए पहली दृष्टि में तो लगता है कि इस गांव का कोई भी बच्चा शिक्षा से वंचित, अनियमित या विद्यालय छोडने वाला नहीं होना चाहिए।

सहरिया बस्ती में बाल मंच एवं बाल सुरक्षा समिति के गठन के बाद नियमित बैठकों एवं अन्य प्रक्रियाओं की शुरुआत की गई।

बाल मंच में बच्चों ने बताया कि वैसे तो हमारी बस्ती के करीब करीब सभी बच्चे अपने अपने स्तर अनुसार मॉ बाडी एवं विद्यालय से जुडे हैं फिर भी कुछ बच्चे ऐसे है जिनका अभी भी किसी मॉ बाडी या विद्यालय में नाम नहीं है, वे कहीं नहीं पढ रहे।

जो बच्चे अभी मॉ बाडी या विद्यालय में पड रहे हैं उन बच्चों की नियमितता पर बात हुई तो सामने आया कि कुछ बच्चे अभिभावकों के ध्यान न देने की वजह से विद्यालय में अनियमित रहते हुए इधर उधर घूमते रहते हैं। कुछ बच्चे ऐसे ही इस दौरान गुटखा सुपारी खाने का शौक भी पाल लेते हैं।

तय किया गया कि बाल मंच के सभी बच्चे अपने अपने पडौस के ऐसे बच्चों की सूचि बनाकर लायेगे, जिनका नाम विद्यालय अथवा मॉ बाडी में नहीं है। ऐसे बच्चों की सूचि भी बनायेंगे जिनका नाम तो विद्यालय या मॉ बाडी में लिखा है लेकिन वे नियमित रूप से मॉ बाडी या विद्यालय में नहीं जा रहे।

ऐसे बच्चों की पूरी सचनाएं बाल मंच के बच्चों ने एकत्रित की। सामने आया कि 2 लडके 4 लडकियां ऐसे है जो कहीं भी पढाई नहीं कर रहे उनका किसी विद्यालय में नाम नहीं है। 13 लडके एवं 16 लडकियों के ऐसे नाम सामने आये जिनका नाम तो विद्यालय में लिखा हुआ है लेकिन वे नियमित पढने के लिए नहीं जाते।

बल मंच की बैठक के दौरान बच्चों से बात हुई, ऐसे बच्चों के लिए क्या होना चाहिए? इनको ऐसे ही घूमने दिया जाना चाहिए या इनके लिए कुछ किया जाना चाहिए?

बच्चों ने एक स्वर में कहा कि ऐसे बच्चों को जिन्होंनें कहीं भी प्रवेश नहीं लिया है उनके अभिभावकों से बात कर उन बच्चों को प्रवेश दिलाएं तथा जो बच्चे अनियमित है उनको भी उनके अभिभावकों से मिल कर विद्यालय मॉ बाडी में नियमित भिजवाना चाहिए।

बाल मंच एवं बाल सुरक्षा समिति ने सभी अभिभावकों से मिलकर उनको एवं बच्चों को समझाते हुए जिन बच्चों का नामांकन नहीं था उनका नामांकन करवाया तथा अनियमित बच्चों को नियमित करवाया।

बच्चों ने इन सब बच्चों पर निगरानी भी रखी। सभी बच्चे नियमित पढने के लिए विद्यालय जा रहे थे लेकिन बंटी थोडे दिन तो नियमित विद्यालय गया और वह वापस अनियमित हो गया। बाल मंच में बातचीत के दौरान निगरानी करने वाले बंटी के पडौसी बच्चों ने बताया कि वह किसी अन्य समुदाय के बडे लडके के साथ सुबह मछली पकडने जाता है, वह लडका बंटी को गुटखा खाने को देता है।

बच्चों ने यह भी बताया कि मछली पकडने के बाद दिन में उस लडके के साथ बंटी बाजार में मछली एवं चिकन इतयादि बिकवाने मे मदद करता है।

बालमंच के बच्चों ने इस प्रकरण को वापस बाल सुरक्षा समिति में रखा, बंटी के अभिभावक एवं स्वयं बंटी को भी बुलाया गया। सामने आया कि बंटी अपने अभिभावकों को भी विद्यालय जाने की ही कहकर निकलता है।

समिति के सामने बंटी के पिताजी ने उस पर निगाह रखते हुए नियमित विद्यालय पहुंचाने का वादा किया, साथ ही बंटी को भी सब लोगों ने पढाई करने के लिए प्रेरित किया। अभी तो बंटी भी नियमित विद्यालय जा रहा है।

कुछ दिन बाद जब बंटी को उस लडके ने वापस काम करने को कहा और साथ में कुछ रोजाना पैसे देने को भी तैयार होगया तो बंटी ने कहा कि मछली मुर्गा तो बाद में भी बेच लुगाा अभी तो पढाई करनी है।यह सब बंटी के दोस्त बाल मंच में बता रहे थे।

6

बच्चों को आगे की पढाई के लिए भेजना तो पडेगा ही.....

बारॉ जिले की शाहाबाद पंचायत समिति की संदोकडा ग्राम पंचायत का गांव नुकर्रा। शाहाबाद सें 25 किलोमीटर दूर बसा है। सन्दोकडा ग्राम पंचायत मुख्यालय से लगभग 7 किमी की दूरी पर सबसे अतिंम छोर पर बसा है नुकर्रा। गांव के आस पास जंगल है। छोटा सा गांव है नुकर्रा। मुख्य आबादी राजपूत समुदाय के अलावा सहरिया समुदाय के 14 परिवारों में 55 लोगों की भी आबादी है। नुकर्रा का रास्ता कच्चा, उबड खाबड है और बीच में एक गहरा नाला भी है।

जहां आम दिनों में भी बस्ती के लोगों को आने जाने में कठिनाई का सामना करना पडता है, वहीं बरसात के दिनो में तो इस बस्ती का संपर्क लगभग कट ही जाता है।

गांव में कक्षा 5 तक के लिए राजकीय प्राथमिक विद्यालय संचालित है। इसके बाद बच्चों को पास के गांव मुसैडी जाना हाता है जहां राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय संचालित हैं। नुकर्रा से मुसैडी करीब दो किलोमीटर दूर है ओर छोटे बच्चों के लिए रास्ता भी सुगम नहीं है। रास्ता पहाडी एवं उबड खाबड होने के साथ दो छोटे बडे नाले भी रास्ते के बीच पडते हैं।

इसी वजह से बच्चे नुकर्रा से मुसैडी पढने जाने के लिए आनाकानी करते हैं और अभिभावक भी शंकित रहते हैं। यह भी एक कारण है जिससे अभिभावक भी अपने बच्चों को मुसैडी जाकर आगे की कक्षाओं में पढने के लिए प्रेरित नहीं करते हैं।

गांव में अभी गुणवत्तापूर्ण एवं समावेशी शिक्षा का माहौल है, इसके लिए बच्चों का बाल मंच एवं बडों की बाल सुरक्षा समिति काम करती है।

बाल मंच की बैठक के दौरान ही यह बात सामने आई थी कि हमारे समुदाय(सहरिया) के कुछ बच्चे जो राजकीय उच्च प्राामिक विद्यालय मुसैडी में नामांकित हैं लेकिन वे विद्यालय नहीं जा रहे।

बच्चों ने आपस में विचार विमर्श कर तय किया कि वे अगली बैठक में ऐसे विद्यालय नहीं जाने वाले बच्चों की सूचि बनाकर लायेंगे ताकि उन बच्चों को विद्यालय में नियमित करने के लिए बडों की बैठक में बात कर सकें और वे बच्चों के अभिभावकों से मिलकर उन बच्चों का नियमित विद्यालय जाना सुनिश्चित कर सकें।

दो बच्चों सचिन तथा रामू ने इस प्रकार विद्यालय में अनियमित अथवा गायब रहने वाले बच्चों की सूचि तैयार करने की जिम्मेदारी ली।

अगली बैठक में सूचि बनकर आगई थी जिसके अनुसार अजय, शिवराज, लाखन, हेमराज एवं करण ऐसे 5 बच्चे थे जो विद्यालय में अनियमित या गायब रहते थे। तय किया गया कि हम आज ही बडों (बाल सुरक्षा समिति) की बैठक में इस प्रकरण को रखेंगे ताकि वे इन बच्चों के अभिभावकों से मिलकर आगे की कार्यवही तय करें।

बाल सुरक्षा समिति की बैठक में बात हुई। इस पर भी चर्चा हुई कि इन पांच बच्चों को तो विद्यालय भिजवाना ही है साथ ही कुछ ऐसी व्यवस्था तय करें कि आगे इस तरह से बच्चों की पढाई में बाधा नहीं आये तथा कोई भी 6 से 14 वर्ष की आयु वर्ग का बच्चा जो विद्यालय जाने योग्य है वह नियमित विद्यालय जाये और उसको गुणवत्तापूर्ण समावेशी शिक्षा मिले।

सबने इस पर गहन विचार विमर्श के बाद कुछ व्यवस्थाएं तय की जो इस प्रकार थीः

- गांव समुदाय का हर बच्चा जो विद्यालय जाने योग्य है उसके अभिभावक उसको अनिवार्य रूप से नियमित विद्यालय भेजेंगे।
- अगर कोई अभिभावक इस पर ध्यान नहीं देता है तो पहली बार उसको हर प्रकार से समढाया जायेगा तथा उसके सामने अगर किसी प्रकार की समस्या भी है तो उसका मिलकर समाधान करने का भी प्रयास करेंगे लेकिन बच्चे को नियमित विद्यालय भेजने पर किसी प्रकार का समझौता नहीं किया जायेगा।
- समझाने के बाद भी अगर कोई अभिभावक इस व्यवस्था का उलंघन करता है तो उसे सामाजिक दण्ड दिया जायेगा जो आर्थिक के साथ साथ सामाजिक बहिष्कार का भी हो सकता है।

छोटी बस्ती होने से लगभग सभी परिवार बैठक में शामिल थे। सभी बस्ती में बनी इस प्रकार की व्यवस्था से सहमत थे।

समुदाय के एक सदस्य ने यह याद जरुर दिलाया कि बच्चों को विद्यालय भेजने में किसी को कोई ऐतराज नहीं है, होना भी नहीं चाहिए क्योंकि यह सब कुछ हमारे बच्चों के भले एवं उनके उज्ज्वल भविष्य के लिए ही हो रहा है लेकिन हमें बच्चों के विद्यालय जाने में रास्ते एवं नालों इत्यादि की जो समस्या है इस पर भी अवश्य कुछ करना चाहिए।

बरसात में तो अभिभावको एवं बच्चों के चाहते हुए भी बच्चों के विद्यालय जाने में बाधा आ ही जाती है।

तय किया गया कि आगे हम सब मिलकर रास्ता इत्यादि भी ठीक करवाने की प्रक्रिया शुरु करेंगे। फिलहाल आज तो इन पांचो बच्चों का कल से नियमित विद्यालय जाना तय रहा।

लौटते में आपस में बात हो रही थी क्या करें बच्चों को आगे की पढाई के लिए भेजना तो पडेगा ही.....

पांचों बच्चे विद्यालय में नियमित हो चुके हैं, निगरानी भी रखी जा रही है।

7

सितौलिया से कक्षा कक्ष तक

ओये! सितौलिया जल्दी बना, गेंद दूर चली गई है। आज बालमंच की बैठक का दिन था। बैठक समय से काफी पहले ही बच्चे इकट्ठे हो गये और सितौलिया खेले लगे। खेले वाले बच्चों के अलावा भी दूसरे काफी बच्चे तरफ खडे होकर खेलने वाले बच्चों का उत्साहवर्धन करते हुए हल्ला मचा रहे थे।बैठक के लिए प्रक्रिया सहज कर्ता के पहुंचने का समय भी हो रहा था, इसलिए बच्चे जल्दी कर रहे थे ताकि बैठक शुरु होने से पहले सितौलिये की चल रही बाजी पूरी हो जाये।

लो, सर भी आ गये! एक बच्चे ने प्रक्रिया सहज कर्ता को आते हुऐ दूर से ही देखकर कहा। बाजी पूरी होगई तो बच्चों ने खेल बंद कर दिया और बैठक स्थल की तरफ प्रक्रिया सहजकर्ता के साथ चल दिये। सभी बच्चे एक छोटा सा विश्राम लेते हुए अपने अपने घर गये, पानी इतयादि पीकर वापस बैठक स्थल पर आकर गोल घेरा बना कर बैठ गये। बैठने की यही व्यवस्था तय कर रखी है बच्चों ने।

गत बैठक के निर्णय के अनुसार आज विद्यालय परिसर में आवश्यक भौतिक सुविधाओं पर प्रक्रिया सहजकर्ता बताने वाले थे। बातचीत का सिलसिला यहीं से शुरु हुआ। प्रक्रिया सहजकर्ता ने बताया विद्यालय में कक्षाओं एवं बच्चों की संख्या के अनुपात में आवश्यक संख्या में कक्षा कक्ष होने चाहिए, बच्चों को पीने के लिए शुद्ध पेय जल, विद्यालय परिसर के चार दीवारी, बालक एवं बालिकाओं के लि अलग अलग शौचालय तथा बच्चों के खेलने के लिए सुरक्षित खेल का मैदान भी होना चाहिए इत्यादि।

प्रक्रिया सहजकर्ता ने जैसे ही अपनी बात पूरी की बच्चो बोल उठे, सर इस हिसाब से तो हमारे विद्यालय में बहुत कम कक्षा कक्ष हैं, काफी कक्षाओं की पढाई खुले में ही होती हैं। एक बच्चे ने कहा , पीने के पानी की व्यवस्था तो है ही नहीं सब बच्चों को पानी पीने के लिए या तो घर जाना पडता है या घर से बोतल साथ लाते हैं जो पूरा नहीं पडता।

यह भी तय किया कि आज हम अपनी यह समस्या बडों के सामने रखेंगे। आज बाल सुरक्षा समिति एवं विद्यालय प्रबंधन समिति की साझा बैठक होने वाली थी। बच्चों ने अपनी समस्याओं को बडों के सामने रखने लिए शिवम, रानी एवं कपिल का नाम तय किया।

बच्चे बाल सुरक्षा समिति की बैठक में शामिल हुए। बाल सुरक्षा समिति एवं विद्यालय प्रबंधन समिति आज विद्यालय में शिक्षक सम्मान समारोह तय कर उसकी व्यवस्थाओं पर बात करने वाली थी। पहले बच्चों को सुना एवं जो समस्यायें बच्चों ने बताई उनका जल्दी ही समाधान करवाने का आश्वासन दिया।

बैठक मे जहां शिक्षक समान रमारोह के आयोजन एवं व्यवस्थाओं पर निर्णय लेकर आवश्यक जिम्मेदारियों का बटवारा किया। वहीं बच्चों द्वार उठाये गये मुद्दों के लिए तय किया कि हमें आवश्यक प्रस्ताव इस शिक्षक सम्मान समारोह से पूर्व बनाकर समुदाय के हस्ताक्षर करवा लेने हैं ताकि आवश्यता पडने पर हम तुरंत इसके लिए जिम्मेदारों को दे सके।

यह भी तय किया इस समारोह में हमें उन तमाम जिम्मेदार पंचायती राज प्रतिनिधियों एवं अधिकारियों को भी आमंत्रित करना है जो विद्यालय की ढॉचागत भौतिक सुविधाएं उपलब्ध करवाने के लिए जिम्मेदार हैं।

यह भी तय किया कि जो समस्याएं बच्चों ने बताई है उनको हम जिम्मेदारों के सामने बच्चों द्वारा ही प्रस्तुत करवायेंगे।

आखिर समारोह का दिन आ गया था। आज प्रातः से ही गांव में गहमा गहमी थी। समुदाय के लोग अपनी अपनी जिम्मेदारी के अनुसार तैयारी में लग गये हुए थें तय समय पर समारोह शुरु हुआ। समुदाय एवं बच्चे व्यवस्थित रूप से पाण्डाल में बैठे थे।

आमंत्रित मुख्य अतिथि एवं अन्य अतिथियों को स्वागत सत्कार के उपरांत मंच पर बिठाया गया। बच्चों ने स्वागत स्वरुप सांस्कृतिक प्रस्तुतियां दी।

शिक्षकों के सम्मान की प्रक्रिया के बाद बारी बारी से अध्यक्ष बाल सुरक्षा समिमि, अध्यक्ष विद्यालय प्रबंधन समिति एवं आमंत्रित अथितियों के उद्‌बोधन हुए। विद्यालय में शिक्षकों के उल्लेखनीय कार्यों को सराहा गया। उनको स्मृति चिंह भेंट किये गये। शिक्षक गण भी इस सम्मान समारोह से अभिभूत थे, समुदाय का धन्यवाद ज्ञापित किया तथा साथ ही बच्चों की गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए समर्पण भाव से अपना योगदान देने का समुदाय एवंज न प्रतिनिधियों को आश्वासन दिया।

बाल सुरक्षा समिति एवं विद्यालय प्रबंधन समिति के निर्णय एवं समारोह की तय आयोजनानुसार अब बच्चों की बारी थी, विद्यालय परिसर की आवश्यक ढॉचागत समस्या जो बच्चे महसूस कर रहे थे उनको बारी बारी से बच्चों ने मंचासीन अतिथियों एवं समुदाय के सामने बताई।

शिवम ने बताया कि हमारे विद्यालय में कक्षाओं एवं छात्रों के अनुपात में पूरे कक्षा कक्ष नहीं हैं।कपिल ने बताया कि शिवम कमरों की कमी बताई है लेकिन इसके साथ मै। यह भी जोडना चाहता हूॅ कि जो कमरे हैं उनकी सबकी छतें टपकती हैं और बरसात होने के समय विद्यालय की छुट्टी करनी पडती है, पसिर के चार दीवारी भी नहीं है जिसकी वजह से आवारा जानवर इत्यादि हमको परेशान करते रहते हैं। रानी ने विद्यालय में पीने के पानी की समस्या का जिक्र किया।

ग्राम पंचायत के सरपंच ने बच्चों द्वारा बताई गई समस्याओं का जल्दी ही हल निकालने का आश्वासन दिया। धन्यवाद के उपरांत औपचारिक समारोह संपन्न हुआ। जलपान के दौरान समुदाय ने इन्हीं सब समस्याओं के समाधान के लिए लिखित प्रस्ताव जो पहले से ही तैयार थे दिये।

विद्यालय में पानी को बार होकर मोटर लग गई है, कक्षा कक्षों के निर्माण का कार्य चल रहा है। बच्चे खुश हैं आपस में विनोद भी करते हैं आखिर सितौलिये के खेल से कक्षा कक्षों के निर्माण तक पहुंच ही गये।

यह कहानी ग्राम खटका की है।ग्राम खटका जो ग्राम पंचायत का मुख्यालय भी है पंचायत समिति मुख्यालय शाहाबाद से 25 किलोमीटर दूर राष्टीय राज मार्ग 27 पर बारॉ शाहाबाद के बीच मुख्य मार्ग से उत्तर दिशा में बसा है। गांव में अन्य समुदायों के अलावा 160 परिवार सहरिया समुदाय के हैं।

8

अब मचेगी क्रिकेट की धमाचौकडी

आज बाल मंच की बैठक का दिन था, नियत स्थान पर बच्चे नहीं मिले। आस पडौस से मालुम किया तो पता चला कि सभी बच्चे जखौनी के रास्ते पर किसी खेत में खेल रहे हैं। बच्चे स्वयं भी बैठक की नियत जगह के पडौस में यह बता कर गये थे।

जब खेलने की जगह पर बच्चों को जाकर देखा तो बच्चे क्रिकेट खेल रहे थे लेकिन यह क्या! न तो बच्चों के पास बैट था और न ही विकेट, गेंद इत्यादि। बच्चों ने तो किसी पेड की डाली तोडकर उसी के बैट विकेट बना रखे थे तथा प्लास्टिक की थैलियों एवं कपडे की लीरों की बनाई हुई गेंद से ही खेल रहे थे और आनन्द ले रहे थे। वह आउट, वह कैच वो रन इत्यादि का शोर मचा हुआ था।

केवल बच्चे ही नहीं समुदाय के कुछ लोग भी इस तमाशे का आनन्द ले रहे थे जिनमें बाल सुरक्षा समिति के भी कुछ लोग वहां मौजूद थे।

पारी पूरी कर बच्चों ने खेल बंद किया और सर नमस्ते, सर नमस्ते, करते हुए एक जगह आकर इकट्ठे हो गये और बैठक स्थल की तरफ सब चल पडे। अपने अपने घरों में जाकर पानी इत्यादि पीकर आकर गोल घेरे में आकर बैठ गये।

बातचीत की शुरुआत आज के खेल से ही हुई। आज आपको यह क्रिकेट खेलने की क्या सूझी, मैंने पूछा। सर आजकल हर गांव में ही बच्चे क्रिकेट खेलते हैं और कभी कभी आसपास के दो तीन बस्तियों के बच्चे क्रिकेट के टूर्नामेंट का आयोजन भी करते हैं जिसमें हमें भी बुलाते हैं लेकिन हम तो कभी क्रिकेट खेलते भी नहीं और न ही हमारे पास में क्रिकेट का किट है जिससे हम इस खेल का अभ्यास कर सकें इसलिए हमने सोचा क्यों नही हम स्थानीय सामग्री से ही क्रिकेट का किट बनाकर खेलें और अभ्यास करें।

आज हम ऐसा ही सोच कर, इसी प्रकार क्रिकेट खेल रहे थे बच्चे उत्साहित थे। क्या आपने क्रिकेट किट प्राप्त करने के लिए कोई प्रयास किया? मैनें पूछा। बच्चे कहने लगे किससे कहें हमारी कोई सुनता भी नहीं और हमने सुना है यहां मिलता भी नहीं और काफी मंहगा आता है। हम बच्चों के पास कोई पैसे भी नहीं जिनसे हम यह मंगवा सकें। धीरे धीरे बच्चे जैसे गंभीर होते जा रहे थे।

अगर ऐसा है तो यह बात आपको अपनी यह बात बडों को बतानी चाहिए, क्या आपने किसी से इस विषय पर बात की! मैंने पूछा तो बच्चों ने मना किया। सर! क्या आज की बडों की बैठक में हम इस बात को रखें? किशन अचानक बोल उठा। बेशक आपको यह बात अपने बडों से कहनी चाहिए, मैनें कहा।

किशन के साथ दो तीन दूसरे बच्चे भी बडों को बताने के लिए तैयार हो गये। आज बच्चों के बाद बडों(बाल सुरक्षा समिति) की बैठक भी होने वाली थी। बाकी की बातचीत पूरी कर बाल सुरक्षा समिति की बैठक के लिए चला, मेरे साथ बच्चों की तरफ से तय प्रतिनिधि बच्चे भी मेरे साथ थे।

बाल सुरक्षा समिति की बैठक कार्यवाही शुरु हुई, सबसे पहले बच्चों को सुना गया। बच्चों ने अपनी बात विस्तार से बाल सुरक्षा समिति के सामने रखी। इस पर विचार विमर्श हुआ। किससे जाकर कहेंगे? क्यों नही

हम आपस में ही थोडा थोडा आर्थिक सहयोग कर बच्चों को क्रिकेट किट उपलब्ध करवा दें! नारायण ने प्रस्ताव रखा।

ज्यादातर लोग अपनी आर्थिक व्यवस्था देखते हुए चुप रहे लेकिन प्रहलाद, ठाकुर लाल एवं शिब्बु ने नारायण की बात का समर्थन करते हुए कहा कि इसमें चुप रहने की कोई बात नहीं है, इसके लिए जिससे जितना भी सहयोग बने करें तथा अगर कोई सहयोग नहीं भी कर पाता है तो कोई बात नहीं आखिर ये बच्चे हम सबके हैं और ये हमसे ही अपेक्षा रखते हैं।

बाल सुरक्षा समिति ने अपने सदस्यों से आर्थिक सहयोग लेकर बच्चों को क्रिकेट किट उपलब्ध करवाना तय किया। बच्चे तो खुश हो गये, दौड कर गये और अपने अन्य साथी बच्चों को भी तुरंत बताया, सब बच्चे खुश थे।

अगली बैठक के दिन जब गांव पहुंचा तो बच्चों को क्रिकेट किट मिल चुका था, उसी खेत में क्रिकेट की धमाचौकडी मच रही थी। आज बच्चे ही नहीं गांव के समुदाय के लोगों का भी मेला सा लगा हुआ था मानो पूरे समुदाय ने बच्चों का उत्साहवर्धन करने की ठान ली थी।

यह कहानी ग्राम खटका की है।ग्राम खटका जो ग्राम पंचायत का मुख्यालय भी है पंचायत समिति मुख्यालय शाहाबाद से 25 किलोमीटर दूर राष्टीय राज मार्ग 27 पर बारॉ शाहाबाद के बीच मुख्य मार्ग से उत्तर दिशा में बसा है। गांव में अन्य समुदायों के अलावा 160 परिवार सहरिया समुदाय के हैं।

9

दुबारा ऐसी भूल नहीं होगी.....

आज सोमवार था, बाल मंच की बैठक का दिन था। बच्चे बैठक के तय समय से पहले ही इकट्ठा हो गये थे। जब हरिसिंह गांव पहुंचे तो सर नमस्ते, सर नमस्ते, कहते हुए बच्चों ने हरि सिंह को घेर लिया।

हरि सिंह हर सप्ताह गांव आकर बच्चों को खेल खिलाते हैं, उनसे बातें करते हैं तथा इसी सहज प्रक्रिया से बच्चों को उनके हक इत्यादि के बारे में भी बताते हैं।

बच्चों ने इसी प्रक्रिया के दौरान यह जाना था कि बच्चों के साथ भेदभाव करना, उनको ऐसे शब्दों से बोलना जिससे उनको बुरा लगे, उनकी भावना को ठेस लगे, ऐसा करना गलत है और यह बच्चों के साथ किये जाने वाले दुव्यर्वहार एवं भेदभाव की श्रेणी में आता है जो कानूनी अपराध है।

आज जैसे ही खेल खेलने की बात हुई वैसे ही बच्चों ने कहा, सर आज खेल बाद में खेलेंगे आज पहले हम आपसे कुछ बात करना चाहते हैं। जैसे ही हरिसिंह ने यह सुना थोडा अटपटा लगा बच्चे तो हमेशा खेल खेलने की बात पर जोर देते थे आज कौनसी ऐसी बात है जिसको बच्चे पहले करना चाहते है?

सब बच्चे एवं हरिसिंह गोल घेरे में बैठकर बात करने लगे। हरिसिंह ने बच्चों को पहले सुना। बच्चों ने बताया कि सर पिछली बार आपने बताया था कि बच्चों को कोई गाली गलौच नहीं कर सकता, उनको कोई ऐसे शब्द नहीं बोल सकता जिससे बच्चों के मन को ठेस लगे। आपने यह भी बताया था कि अगर बच्चों के साथ ऐसा कोई करता है तो वह कानूनी अपराध है।

हॉ! बताया था, क्यों क्या हुआ? सारे बच्चे एक साथ बोलने लगे तो हरिसिंह ने एक एक कर अपनी बात कहने के लिए बोलां।

सबसे पहले नरेश बोला, सर हमको विद्यालय में दूसरे समुदाय के बडे बच्चे हमारी जाति के नाम से पुकारते हैं। कल दोपहर में खाने के समय जब हम दूसरे समुदाय के बच्चों के साथ खाना खाने बैठे तो गुरुजी ने भी हमको इसी तरह से बोला और अपशब्द कहते हुए खाना खाने से भी रोका। बैठक में आये दूसरे सब बच्चों ने नरेश की बात का समर्थन किया।

हरिसिंह ने जब यह बात समुदाय के बडे लोगों से कहने के लिए पूछा तो बच्चों ने बताया कि हमने इस बारे में बात तो की थी लेकिन अभी तक बताया नहीं है। कारण जानने पर बच्चों ने कहा कि हमने सोचा जब बडे लोगों की बैठक होगी तब बतायेंगे क्योंकि उस बैठक में आप भी मौजूद रहेंगे तो हमारी बात को आप बडे लोगों समझायेंगे, हमें तो वे बच्चे मानकर दौडा भी सकते हैं।

हरिसिंह को बच्चों की बात एवं बच्चों में समाया हुआ डर स्पष्ट लग रहा था। क्या आज आप अपनी बात बडों को बतायेंगे क्योकि आज आपकी बैठक के बाद बडों की बैठक भी होगी? सभी बच्चों ने हॉ की।

सभी बच्चों से अपने छः साथियों के ऐसे नाम तय करवाये जो बडों की बैठक में इस मुद्दे पर बात करने जाने वाले थे। तीन लडके ओर तीन लडकियों के नाम तय किये।

बडों की बैठक शुरु हुई, बाल मंच के तय बच्चे भी बैठक में शामिल हुए। पहले बच्चों को सुना गया। बच्चों ने उनके साथ विद्यालय में हो रहे व्यवहार को विस्तार से बताया। बाल सुरक्षा समिति ने विद्यालय जा कर प्रधानाध्यापक जी से मिलकर इस समस्या का समाधान निकालने का तय किया। विद्यालय स्तर पर समाधान न होने की स्थिति में विभागीय कार्यवाही का भी तय किया। बाल सुरक्षा समिति के पूरे सदस्यों ने विद्यालय में बात करने के लिए सदस्यों के नाम तय किये और अगले दिन विद्यालय जा कर बात करना तय रहा।

अगले दिन तय समय पर बाल सुरक्षा समिति के इस काम के लिए चयनित सदस्य विद्यालय पहुंचे। प्रधाना अध्यापक जी अपने कक्ष में ही मिल गये। आपसी अभिवादन के बाद प्रधानाध्यापक जी ने आने का कारण पूछा तो एक सदस्य ने पूरी घटना बच्चों के बताये अनुसार विस्तार से बताई।

प्रधानाध्यापक जी ने भी बाल सुरक्षा समिति के सदस्यों की बातों को ध्यान से सुना। संबंधित बच्चों एवं संबंधित अध्यापक जी को भी अपने कक्ष में ही बुला लिया तथा घटनाक्रम से अवगत करवाया जो गांव से आये बाल सुरक्षा समिति के सदस्यों ने बताया था।

अध्यापक जी ने भी बिना किसी सवाल जवाब के अपनी भूल को स्वीकार किया। अध्यापक जी ने भी कहा कि जिस समय मिड डे मील दिया जा रहा था उस समय कुछ बच्चे शैतानी कर रहे थे जिससे खाने की व्यवस्था बिगड रही थी। गुस्से की वजह से मेरे मुंह से भी ऐसे शब्द निकल गये जो मुझे नहीं कहने चाहिए थे।

प्रधानाध्यापक जी के कक्ष में उस समय मौजूद सभी लोगों ने इस बात को सकारात्मक लिया और आगे ऐसा नहो हो इसके लिए आपस में एक दूसरे को आश्वस्त किया। लोगों ने कहा कि वे भी समय समय पर विद्यालय आकर सहयोग करते रहेंगे तथा प्रधानाध्यापक जी ने भी लोगों का धन्यवाद ज्ञापित किया।

यह किस्सा है ग्राम कलोनी की सहराना बस्ती का जो ग्राम पंचायत मुंडियर में ब्लॉक शाहाबाद तहसील से 13 किलोमीटर एवं पंचायत मुख्यालय से 3 किमी व जिला मुख्यालय बारॉ से 70 किमी दूरी बसी है।

10

धर्मेन्द्र विद्यालय की तरफ दौडे जा रहा है.....

यही कहा था धर्मेन्द्र की मॉ ने बाल सुरक्षा समिति के लोगों से जब वे धर्मेन्द्र के घर यह जानने आये थे कि धर्मेन्द्र विद्यालय जा रहा है या नही?

बाल मंच की बैठक में बच्चों ने बताया था कि धर्मेन्द्र जो कक्षा चार में पढता है वह शुरु से ही कक्षा में अनियमित रहते रहते पिछले कई महिनों से विद्यालय नहीं जा रहा है।

इस बात की चर्चा बाल सुरक्षा समिति में भी की गई।

तय किया गया कि अभी समिति के दो सदस्य एवं प्रक्रिया सहजकर्ता धर्मेन्द्र के परिवार व बच्चे से मिलेंगे ताकि उसके विद्यालय न जाने का असली कारण जान सकें एवं उस कारण का समाधान करके बच्चे को विद्यालय में नियमित करने का प्रयास किया जा सके।

जब तीनों लोग धर्मेन्द्र के घर पहुंचे तो धर्मेन्द्र की मॉ घर के बाहर ही मिल गई। आपसी अभिवादन के बाद जब धर्मेन्द्र के विद्यालय नहीं जाने की बात की गई तो मॉ ने बताया कि मैं इसे रोज विद्यालय जाने को कहती हूँ, लेकिन नहीं जाता है, कभी कभी चला भी जाता है तो यह विद्यालय न जाकर इधर उधर खेलकर वापस घर आ जाता है।

जब इसके कारण पर बात की गई तो धर्मेन्द्र की मॉ ने बताया कि धर्मेन्द्र के पिताजी का देहांत होगया है। धर्मेन्द्र का एक बडा भाई है जिसकी शादी हो चूकी है वह अलग रहता है।

मेरे पास में एक लडका व दो लडकियां हैं जिनमें से धर्मेन्द्र व गीता तो कक्षा चार में है तथा तीसरे नम्बर की एक लडकी अभी छोटी है।

धर्मेन्द्र के पिताजी के देहांत के बाद सारे घर एवं इन बच्चों के लालनपालन का बोझ मेरे ऊपर आ गया। मैं जैसे तैसे करके इन बच्चों का पेट पाल रही हूँ, काम मजदूरी का भी कोई ठिकाना नहीं। धर्मेन्द्र की बहिन गीता के पहनने के लिए भी कपडे नहीं थे इसलिए जैसे तैसे व्यवस्था करके इसके ड्रेस ही बनवा दी ताकि इसको पहनने को कपडे भी हो जायें एवं यह विद्यालय भी जा सके।

गीता की ड्रेस देखकर यह भी ड्रेस की जिद करता है। यह बात हो ही रही थी उसी समय धर्मेन्द्र भी कहीं से खेलता हुआ घर पर आ गया। उससे भी बात हुई, बच्चा तो बच्चा ही ठहरा, उसे पढाई एवं विद्यालय से ज्यादा कुछ लेना देना नहीं था वह तो विद्यालय नहीं जाने का एक ही कारण बता रहा था, मेरे पास पहनने एवं विद्यालय जाने के लिए ड्रेस नहीं है।

अगर उसे भी ड्रेस मिल जाये तो क्या वह नियमित विद्यालय जायेगा? घर पर आये समुदाय के लोगों ने जब धर्मेन्द्र से पूछा तो उसने नियमित विद्यालय जाने की हॉ की।

धर्मेद्र एवं उसकी मॉ से मिलने गये बाल सुरक्षा समिति के सदस्य एवं प्रक्रिया सहज कर्ता इस समस्या के समाधान का आश्वासन देकर वापस बैठक स्थल पर आये। समस्या के समाधान पर आपस में वापस विचार

विमर्श किया। कई विकल्पों पर बात हुई, लेकिन समस्या का तुरंत समाधान चाहिए था जो दिख नहीं रहा था।

यद्यपि इस पर भी चर्चा की गई कि धमेन्द्र की मॉ के लिए रोजगार, पेंशन एवं बच्चों के लिए पालनहार योजना के लाभ के लिए प्रक्रिया शुरु की जाये। इसकी जिम्मेदारी बाल सुरक्षा समिति के दो सदस्यों ने पहल करके ली।

आखिर में धर्मेन्द्र को ड्रेस तो आपसी आर्थिक सहयोग कर तुरंत उपलब्ध करवाना तय रहा, ताकि वह तुरंत विद्यालय जा सके।इसकी जिम्मेदारी प्रक्रिया सहजकर्ता को दी।

दो दिन बाद धर्मेन्द्र के लिए ड्रेस बनकर आ गई थी, धर्मेन्द्र खुश था। वह नियमित विद्यालय जाने लगा था, यही समुदाय द्वारा की जाने वाली निगरानी के दौरान पाया गया था।

धर्मेन्द्र ग्राम जखौनी ग्राम पंचायत गणेशपुरा, तहसील शाहाबाद जिला बारॉ का रहने वाला है। जखौनी ब्लॉक शाहाबाद से 32 किलोमीटर एवं जिला मुख्यालय बांरा से 70 किमी एवं पंचायत मुख्यालय से 5 किमी की दूरी पर बसा है। यह गॉव कोटा से शिवपुरी राष्ट्रीय राज्य मार्ग 27 से उत्तर दिशा में 15 किमी दूर है। ब्लाक शाहाबाद से जखौनी ग्राम तक पक्की सडक है, गांव मे सहरिया समुदाय के 65 परिवार निवास करतें है जो अधिकतर कृषि व मजदुरी व लघु वनोपज पर निर्भर हैं।

11

गंगा मैया की कृपा.....

आज राकेश जब बाल सुरक्षा समिति की बैठक में जाने लगा तो पत्नि ने टोका, सुनो पिछले दिनों से सब बच्चों को विद्यालय पहुंचाने, उनको अच्छे से पढाने, बढिया खिलाने पिलाने की बातें हो रही है और अब तो बस्ती का कोई बच्चा भी ऐसा नहीं है जो विद्यालय नहीं जाता हो। लेकिन आपको पता है बस्ती में दो में से एक हैंडपंप चालू था। उसका पानी भी अब सूख चुका है? उसमें पानी की जगह अब हवा भर जाती है, राकेश ने हॉ में सिर हिलाया। पीने का पानी, नहाने के लिए पानी कहां से आये? बच्चे क्या पीयें एवं नहायें कैसे? पास में दूसरे समुदाय की बस्ती में पानी लेने जाते हैं तो वे हमें वहां पानी नहीं लेने देते। आप इस पर बात नहीं करोगे क्या? क्या यह बच्चों से जुडा मुद्दा नहीं है? बिलकुल है, आज मैं इसी बात को बैठक में रखूंगा, राकेश ने बैठक के लिए रवाना होते वक्त अपनी पत्नि से कहा।

बाल सुरक्षा समिति की बैठक शुरु हुई। सबसे पहले बच्चों की गुणवत्तापूर्ण एवं समावेशी शिक्षा के लिए किये गये प्रयासों की समीक्षा की गई, पाया कि बच्चे तो सारे शिक्षा की मुख्य धारा से जुड चुके हैं और उनकी निगरानी भी हो रही है सब बच्चे नियमित विद्यालय जा रहे हैं। आज सबसे पहले राकेश ही बोल पडा, अन्य विषय जो आज की बैठक के ऐजेण्डा के हैं उन पर तो आवश्यक रुप से हमें बात करनी ही है, लेकिन इस समय बस्ती में पानी की भयंकर किल्लत चल रही है। यह भी एक महत्वपूर्ण समस्या हे जिससे पूरी बस्ती प्रभावित हो रही है बच्चे भी प्रभावित हैं, हमें इसके समाधान पर तुरंत कदम उठाना चाहिए।

इस बात से सब सहमत थे। बैठक में मौजूद अन्य सदस्य भी इस मुद्दे पर बात करना ही चाह रहे थे, राकेश ने उसकी शुरुआत कर दी थी।विचार विमर्श हुआ, विश्लेषण किया गया, बस्ती में दो हैंडपंप है। जिसमें से एक तो काफी दिनो पहले ही सूख चुका है, एक से काम चल रहा था उसने भी पानी की जगह हवा फेंकना शुरु कर दिया है।बस्ती में आवश्यकता के पर्याप्त पानी की उपलब्धता सबकी प्राथमिकता थी।

निर्णय किया गया कि इसके लिए आज ही जलदाय विभाग तथा सहायक कलेक्टर, सहरिया, शाहाबाद के नाम प्रस्ताव तैयार कर पूरे समुदाय के हस्ताक्षर करवा कर कल ही बस्ती के 25–30 महिला पुरुष शाहाबाद जाकर संबंधित विभाग एवं अधिकारियों से मिलकर पानी की समस्या का समाधान करवायें। यह भी तय किया गया कि इसके लिए एक ट्रेक्टर ट्रोली किराये पर ले लें और इस खर्च के लिए हस्ताक्षर करवाते समय हर परिवार से 10–10 रुपये खर्च राशि के लिए एकत्रित कर लें।

तय योजना के अनुसार बस्ती से पूरी तैयारी कर 25–30 लोग शाहाबाद पहुंचे। कलेक्टर, सहरिया, शाहाबाद से जाकर मिले, सहायक कलक्टर महोदय ने लोगों की बात ध्यान से सुनी, प्रस्ताव लिया, उसी पर जलदाय विभाग को समस्या समाधान के आदेश किये। जलदाय विभाग के सहायक अभियंता को फोन करके भी वडारा के लोगों की समस्या पर तुरंत कार्यवाही कर उन्हें भी अवगत करवाने के लिए कहा।

लोग जब जलदाय विभाग पहुंचे तो सहायक अभियंता जैसे उनके लिए ही खडे थे और इंतजार कर रहे थे।

लोगों ने दो प्रस्ताव एक साथ सहायक अभियंता के हाथ में दिये जो एक तो विभाग के नाम था तथा दूसरा सहायक कलक्टर महोदय के आदेश सहित था। सारी बात सुनने के बाद सहायक अभियंता ने समस्या का

समाधान एक सप्ताह के अंदर अंदर करने का आश्वासन दिया। यह भी कहा कि बोर कहां लगेगा यह तय करके रखें।

लोग खुश होकर गांव लौटे थे। राकेश भी लागों के साथ शाहाबाद में इस प्रक्रिया में शामिल रहा था, वह भी खुश हो रहा था, सोच रहा था कब गांव पहुंचूं और कब अपनी पत्नि को यह खुशखबरी दूँ! शाम से पहले लोग वापस गांव पहुंच गये थे। पूरे गांव में यह खबर फैल गई थी कि अब जल्दी ही एक सप्ताह के अंदर हमारी बस्ती में नया बोर लग जायेगा और पानी की समस्या से छुटकारा मिलेगा। राकेश की पत्नि ज्यादा खुश थी क्योंकि उसने ही इस समस्या के समाधान के लिए याद दिलाया था।

इस प्रक्रिया में करीब करीब सभी परिवारों का प्रतिनिधित्व था इसलिए बोर की जगह भी सबने ट्रेक्टर की ट्रेली में ही तय कर ली थी। गांव में बताया तो जगह के बारे में सबने सहमति देते हुए राकेश एवं चार अन्य लोगों को जिम्मेदारी दी कि जब बोर के लिए मशीन आये तो वे लोग साइड पर मौजूद रह कर काम करवायें तथा अन्य कोई मदद की जरुरत हो तो समुदाय को बतायें।

पूरा गांव एक सप्ताह बीतने का इंतजार करने लगा, लेकिन यह क्या बोर करने की मशीन तो तीसरे ही दिन गांव पहुंच गई थी। मशीनकर्मी राकेश का घर पूछ रहे थे क्योकि शाहाबाद में उसी का नाम लिखवाकर आये थे। राकेश तुरंत मशीन के पास पहुंच कर मशीन को वहां ले गया जो जगह समुदाय ने बोर के लिए तय की थी। मशीन देखकर बस्ती के सारे लोग बिना बुलाये ही मशीन के पास आकर इकट्ठा हो गये थे।

समुदाय ने नारियल इत्यादि से मशीन की पूजा की, गुड बांटा और भरपूर एवं मीठा पानी निकलने की कामना की। बोर होना शुरु हुआ, लोग चारों ओर खडे थे, आखिर वह पल भी आ गया जब बोर से पहली बार पानी छलका। लोगों ने पानी चखने से पहले कई छोटे छोटे बर्तनों में लेकर पहले अपनी बस्ती के देवताओं को ले जाकर अर्पण किया, उसके बाद चखा, पानी मीठा था।

इस समय तक बोर से ज्यादा पानी छलकने लगा तो लोगों ने गंगा मैया की जय बोली। सब कह रहे थे भरपूर एवं मीठा पानी निकलना गंगा मैया की कृपा का फल है। बोर में भरपूर पानी मिला था लोग खुश थे अब तो बार बार मशीन कर्मियों से यही पूछ रहे थे, भैया इसमें मोटर कब डलेगी? जल्दी ही का आश्वासन दिया था मशीनकर्मियों ने।

मोटर का इंतजार ज्यादा नहीं करना पडा, दूसरे दिन मोटर भी बोर में फिट कर दी गई थी। जैसे ही मोटर ने पानी देना शुरु किया, हर घरों से पानी के बर्तन उधर ही आ रहे थे। बच्चे ज्यादा ही खुश थे, उन्होंने तो पाइप के नीचे बैठकर नहाना ही शुरु कर दिया था। समुदाय खुश था एक दूसरे से कह रहे थे यह मिलकर शाहाबाद जाकर कार्यवाही करने का परिणाम है।

राजपुर ग्राम पंचायत का गांव वडारा श्योपुर मुण्डियर रोड पर शाहाबाद से 21 किलोमीटर दूर मुख्य सडक पर कराहल (म.प्र.) एवं राजपुर (राज.) के बीच बसा है। गांव में सभी समुदायों के लोग रहते हैं। 63 परिवारों में लगभग 280 लोगों की आबादी वाली सहरिया बस्ती गांव के नजदीक अलग बसी है। गांव मे प्राथमिक विधालय, ऑगनबाडी केन्द्र, व मॉ बाडी केन्द्र की सुविधा है। कृषि, मजदूरी एवं मौसम आधारित लघु वन उपज ही लोगों के जीवनयापन का जरिया है।

12

नवाचार व गुणवत्ता को नमन

राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय के प्रधानाध्यापक जी गांव में गठित बाल सुरक्षा समिति एवं स्थानीय विद्यालय के लिए गठित विद्यालय प्रबंधन समिति से सक्रिय रूप से जुडे हैं। वे विद्यालय की प्रगति, समस्या इत्यादि को आवश्यकतानुसार दोनो समितियों के साथ साझा करते रहते हैं, इसी प्रकार दोनो समितियों के सदस्य भी विद्यालय परिवार के साथ सक्रिय रूप से जुडे हैं।

सामान्यतया हर वर्ष कक्षा 8 के छात्रों को आगे की कक्षा 9 में प्रवेश लेने के पूर्व विद्यालय से ससम्मान एवं हर्ष के साथ विदा किया जाता रहा है। इस वर्ष भी कक्षा 8 के छात्रों को विदाई देने का समय आ चुका था और प्रधानाध्यापकजी अपने साथियों के साथ इस पर चर्चा कर रहे थे। सभी अध्यापक गण अपने अपने विचार बता रहे थे।

एक अध्यापक जी ने सुझाव दिया कि इस वर्ष हमें विद्यालय संचालन में समुदाय का विशेष सहयोग मिला है, मेरा सुझाव है कि इस वर्ष हमें इस कार्यक्रम को समुदाय के साथ मिलकर करना चाहिए। इस कार्यक्रम की कार्य योजना को हम समुदाय के साथ भी साझा करें तथा समुदाय के उपयोगी सुझावों को भी सम्मलित करते हुए काय्रक्रम को समुदाय व विद्यालय परिवार मिलकर करें तो ठीक रहेगा।

सुझाव सबको अच्छा लगा और जल्दी ही एक बैठक विद्यालय परिसर में बाल सुरक्षा समिति एवं विद्यालय प्रबंधन समिति के साथ साझा रूप में करना तय किया गया। समुदाय की सुविधा से बैठक का आयोजन हुआ। प्रधानाध्यापकजी ने आयोजित बैठक का उद्देश्य विस्तार से बताया जिसको दोनों ही समितियों(बाल सुरक्षा समिति एवं विद्यालय प्रबंधन समिति) के सदस्यों ने सहर्ष स्वीकार करते हुए खुशी जाहिर की ओर इस कार्यक्रम को एक उत्सव का रूप देने का तय किया।

साझा कार्य योजना बनी, सम्पूर्ण व्यवस्थाओं (शामियाना,माईक पीने का पानी, जलपान, मेहमानों को आमंत्रण, स्मृति चिन्ह, फोटोग्राफी इत्यादि)की जिम्मेदारी दोनो समितियों के सदस्यों ने व्यक्तिशः अलग अलग ली। कार्यक्रम की रूपरेखा व संचालन की जिम्मेदारी प्रधानाध्यापक जी ने अपने साथियों के सहयोग से स्वयं के पास रखी।

इस विदाई समारोह में स्थानीय ग्राम पंचायत खटका के सरपंच महोदय, पंचायत समिति की प्रधान महोदया एवं ब्लाक स्तरीय शिक्षा विभाग के अधिकारियों को भी आमंत्रित किया गया।

कार्यक्रम के एक दिन पूर्व से ही तैयारियां शुरु हो गई। समुदाय के लागों ने एक दिन पहले ही विद्यालय पसिर व आसपास की विशेष सफाई की। शामियाना व माइक लगा, रंगोली सजाई गई। हर व्यक्ति अपनी अपनी जिम्मेदारी को बेहतर एवं पहले करने में लगा हुआ था। पूरा समुदाय उल्लासित था, विद्यालय के बच्चे विशेष खुश थे जिनके द्वारा विदाई दी जानी थी और जिनको विदाई दी जानी थी। बच्चे भी अपनी अपनी तैयारियों में जुटे थे।

इस अवसर पर बच्चों ने सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत करने की तैयारी की थी। जिन बच्चों को विदाई दी जानी थी उनको जहां इतना अच्छा विद्यालय छोडना अच्छा नहीं लग रहा था वहीं आगे की कक्षा में अन्यत्र प्रवेश लेने की खुशी भी थी।

तय समय पर कार्यक्रम शुरु हुआ। बच्चों एवं समुदाय के द्वारा आये मेहमानों का स्वागत सत्कार किया गया। काग्रक्रम संचालन में हर व्यक्ति अपनी अपनी जिम्मेदारी बखूबी निभाते नजर आया। बच्चों द्वारा गीत, कविता,नृत्य इत्यादि के कार्यक्रम प्रस्तुत किये गये।

बच्चों ने कक्षा 8 के साथियों को विदा करने की रश्म निभाई वहीं बडों ने एवं बाहर से आये मेहमानो ने विदा होने वाले बच्चों को शुभकामनाएं एवं आशीर्वाद दिया।

बाहर से आये मेहमानों ने बच्चों एवं समुदाय का उत्साहवर्धन किया और अपने उद्‌बोधन में कहा कि इस विद्यालय के ऐसे नवाचार एवं गुणवत्ता को हम नमन करते हैं और इसके लिए इस विद्यालय परिवार को एवं यहां के समुदाय को धन्यवाद देते हैं जो शिक्षा में गुणवत्ता एवं नवाचारों का रास्ता दिखा रहे है।

यह विद्यालय है गांव सेमलीफाटक, का राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय ग्राम पंचायत खटका पंचायत समिति शाहाबाद। ब्लॉक मुख्यालय से 30 किलोमीटर व ग्राम पंचायत मुख्यालय खटका से 5 किलो मीटर दूर बसा है। ब्लॉक मुख्यालय शाहाबाद सें सेमलीफाटक तक पक्की सडक है। गांव सेमली फाटक में राजकीय उच्च प्राथथिक विद्यालय के अलावा आंगन बाडी व मॉ बाडी की सुविधा भी है।

गांव की सहरिया बस्ती में 112 सहरिया परिवार निवास करतें है। सहरिया समुदाय मुख्यतया खेंती एवं मजदूरी व मौसम अनुसार लघु वन उपज के कार्य पर निर्भर है।

13

हैंड पंप की भी तो कोई सुने.....

विद्यालय जाने का समय होने पर भी आज नवलू घर पर ही बैठा था, अपने छोटे भाई बहिनों को खिला रहा था, घर पर कोई नहीं था। मॉ हैंडपंप पर पानी लेने गई थी जो अभी तक लौटी नहीं थी। नवलू के साथ विद्यालय जाने वाले दोस्तों ने जब नवलू को विद्यालय चलने के लिए आवाज लगाई तो नवलू ने कहा मुझे मॉ मेरे इन छोटे भाई बहिनों के पास छोडकर गई है और कहकर गई है कि मैं पानी लेने जा रही हूॅ जल्दी ही वापस आ जाउंगी मेरे आने के बाद तू विद्यालय चले जाना।

मॉ अभी लौटी नहीं है, इसलिए मैं आप लोगों के साथ नहीं चल सकता, मॉ अगर जल्दी आ गई तो मैं दौड कर आ जाउंगा। नवलू के दोस्त विद्यालय के लिए रवाना हो गये, काफी देर के बाद भी मॉ नहीं लौटी थी। उसके दोस्त तो विद्यालय पहुंच भी गये होंगे, नवलू सोच रहा था।

जब मॉ पानी लेकर लौटी तो काफी देर हो चुकी थी, नवलू अब अकेला विद्यालय जाने के लिए अकेला तैयार नहीं था। मॉ भी नवलू को अकेला विद्यालय नहीं भेजना चाह रही थी क्योंकि नवलू अभी छोटा था, विद्यालय दूसरे गांव में था जिसके रास्ते में जंगल एवं नाला पडता था।

मॉ सोचने लगी सबने मिलकर यह तो तय कर लिया कि हर बच्चा हर दिन विद्यालय जायेगा लेकिन इस पानी और हैंडपंप ने तो आज नवलू को विद्यालय जाने से रोक ही दिया। गांव में दो हैंडपंप हैं, एक काफी दिनो से खराब पडा है, दूसरे में भी पानी कम ही आता है और पूरी बस्ती के लोग उसी पर निर्भर है जिससे हर महिला को घर के लिए पानी लाने में ही सारा समय लग जाता है। नवलू का विद्यालय जाना इसी वजह से छूटा था।

नवलू के पिताजी कहीं से दोपहर में घर लौटे तो नवलू को घर पर देखकर उसकी मॉ पर नाराज हुए। कहने लगे समुदाय की बनी व्यवस्था के अनुसार अगर बच्चा एक दिन भी विद्यालय नहीं जाता है तो मुझे बाल सुरक्षा समिति में जवाब देना पडता है।

तो मैं क्या करुं, मैं कब चाहती हूॅ कि बच्चा विद्यालय नहीं जाये! लेकिन आप लोगों को हमारी दूसरी पानी की समस्या नहीं दिखती जिसकी वजह से आज नवलू का विद्यालय छूटा। हैंड पंप की भी तो कोई सुनेगा कि नहीं? नवलू की मॉ गुस्से में थी।

आज बस्ती में बाल सुरक्षा समिति की बैठक थी। नवलू के पिताजी अपनी पत्नि की बात सुनकर सीधे वहीं बैठक में चले गये। जाते ही आज की बैठक के ऐजेंडे में हैंडपंप के मुद्दे को निर्णय एवं कार्यवाही के लिए शामिल करवाया, यद्यपि दूसरे सदस्य भी विशेषकर महिला सदस्य इसी मुद्दे के लिए कार्यवाही करना चाह रहे थे।

गांव में सभी को पानी की समस्या का सामना करना पड रहा था इस लिए तय किया कि अभी जलदाय विभाग के नाम गांव की तरफ से प्रस्ताव तैयार कर कल तीन लोगों को प्रस्ताव लेकर विभाग में देने के लिए भेजना है।

प्रस्ताव तैयार किया गया। समुदाय के हस्ताक्षर करवा कर कल विभाग में शाहाबाद पहुचाने की जिम्मेदारी रमेश, पप्पू एवं अमर लाल को दी गई।तीनों ने मिलकर शाम को पूरे समुदाय के प्रस्ताव पर हस्ताक्षर करवाये। दूसरे दिन तीनो ने जाकर प्रस्ताव जलदाय विभाग में दे दिया एवं उसकी रसीद भी लेली।

एक से दो दिन में हैंडपंप ठीक करवाने का आश्वासन भी विभाग से मिल गया। तीनो खुशी खुशी गांव लौट आये और सबको बता दिया कि हैंडपंप दो दिन में ठीक हो जायेगा।

एक दिन बाद हैंडपंप मिस्त्री हैंडपंप को ठीक करने गांव पहुंच गया लोग खुश थे, हैंडपंप को ठीक करवाने में मदद करने के लिए हैंडपंप पर पहुंच गये। लोगों की मदद से हैंडपंप खोलना शुरु किया। पता लगा कि हैंडपंप के दो पाइप गल चुके हैं ओर पानी नीचे चले जाने की वजह से दो पाइप इसमें नये जोडने की जरुरत है अतः चार पाइप शाहाबाद विभाग से लाने होंगे।

सभी ने उन तीनों (रमेश, पप्पू एवं अमर लाल) को ही जिम्मेदारी देकर मिस्त्री के साथ ही शाहाबाद भेजा ताकि पाइप आज ही मिल जायें और कल हमारा हैंडपंप ठीक हो जाये। मिस्त्री के साथ पहुंचकर तीनों जनों ने चार नये पाइप प्राप्त किये और पाइप लेकर गांव आ गये। किराये इत्यादि की व्यवस्था समुदाय ने उनको जिम्मेदारी देते समय ही कर दी थी।

दूसरे दिन सुबह से ही लोग मिस्त्री का इंतजार कर रहे थे। आखिर इंतजार खत्म हुआ। मिस्त्री आया। समुदाय की मदद (पाइप खोलना, पकडना, वापस डालना इत्यादि)से हैंड पंप ठीक हुआ, पर्याप्त पानी मिलने लग गया था, लोग खुश थे। अब नवलू को अनावश्यक विद्यालय से गैरहाजिर नहीं होना पडेगा।

यह बात हो रही है तिपरका मानपुर सहरिया बस्ती की जो मूल गांव तिपरका से लगभग दो किलो मीटर दूर बसी है जिसमें 19 परिवारों की आबादी 123 लोगों की है। तिपरका एवं तिपरका मानपुर सहरिया बस्ती के बीच रास्ता कच्चा, उबड खाबड है और बीच में एक गहरा नाला भी है।

बारॉ जिले की शाहाबाद पंचायत समिति की संदोकडा ग्राम पंचायत का गांव तिपरका।शाहाबाद सें 22 किलोमीटर दूर बसा है। सन्दोकडा ग्राम पंचायत मुख्यालय से लगभग 8 किमी की दूरी पर सबसे अतिंम छोर पर बसा है तिपरका। गांव के आस पास जंगल है। ग्राम तिपरका का सहरिया समुदाय कभी एक ही जगह बसा था लेकिन आवास व्यवस्था कम पडने के कारण सरकार ने सहरिया आवास योजना एवं इन्द्रा आवास योजना के तहत इस बस्ती को दो जगह बसा दिया । ये दोनो बस्तियां आज क्रमशः तिपरका एवं तिपरका मानपुर के नाम से जानी जाती है।

14

रास्ता हुआ सुगम

बारॉ जिले की शाहाबाद पंचायत समिति की संदोकडा ग्राम पंचायत का गांव तिपरका।शाहाबाद सें 22 किलोमीटर दूर बसा है। सन्दोकडा ग्राम पंचायत मुख्यालय से लगभग 8 किमी की दूरी पर सबसे अतिंम छोर पर बसा है तिपरका। गांव के आस पास जंगल है। ग्राम तिपरका का सहरिया समुदाय कभी एक ही जगह बसा था लेकिन आवास व्यवस्था कम पडने के कारण सरकार ने सहरिया आवास योजना एवं इन्द्रा आवास योजना के तहत इस बस्ती को दो जगह बसा दिया । ये दोनो बस्तियां आज क्रमशः तिपरका एवं तिपरका मानपुर के नाम से जानी जाती है।

यह बात हो रही है तिपरका मानपुर सहरिया बस्ती की जो मूल गांव तिपरका से लगभग दो किलो मीटर दूर बसी है जिसमें 19 परिवारों की आबादी 123 लोगों की है। तिपरका एवं तिपरका मानपुर सहरिया बस्ती के बीच रास्ता कच्चा, उबड खाबड है और बीच में एक गहरा नाला भी है।

जहां आम दिनों में भी बस्ती के लोगों को आने जाने में कठिनाई का सामना करना पडता है, वहीं बरसात के दिनो में तो इस बस्ती का संपर्क लगभग कट ही जाता है।

गांव का राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय मूल गांव तिपरका में संचालित है। तिपरका मानपुर सहरिया समुदाय के बच्चे भी इसी विद्यालय में पढते है।

तिपरका मानपुर में बाल सुरक्षा समिति की बैठक में जब बस्ती के बच्चों की नियमित पढाई लिखाई पर बात चीत की गई तो इसी समस्या को रेखांकित किया कि बाकी दिनों में तो बच्चे फिर भी किसी प्रकार विद्यालय चले जाते हैं, लेकिन बरसात में तो बच्चों को विद्यालय जाने में बहुत समस्या होती है और हम लोग भी पीछे से शंकित रहते हैं कि बच्चे सही सलामत वापस घर पहुंच जायें। यही कारण है कि हमारे न चाहते हुए भी बच्चे विद्यालय में अनियमित हो जाते हैं।

विद्यालय के बारे में बातचीत करने पर सदस्यों ने बताया कि विद्यालय नियमित चलता है, हमारी जितनी जानकारी है उसके अनुसार सभी अध्यापक भी भले लोग हैं, बच्चों को अच्छे से पढाते हैं, लेकिन इसी समस्या के कारण हमारे बच्चों की पढाई में रुकावट आती है।

एक महिला सदस्य ने तो यहां तक कह दिया कि यह नाला नहीं हमारे बच्चों की जान का दुश्मन है। समाधान पर भी बात हुई लेकिन सदस्यों का कहना था कि बार बार पंचायत इत्यादि में कोशिश करने के बावजूद भी कोई हल नहीं निकला है। बैठक में रास्ते एवं नाले की समस्या के समाधान के लिए वापस मिलकर प्रयास करना तय किया गया और अगली बैठक का ऐजेंडा भी यही रखा गया।

इस बीच तिपरका की बाल सुरक्षा समिति ने विद्यालय के अध्यापकों की नियमितता तथा बच्चों के साथ बाल मित्रवत व्यवहार के साथ साथ बच्चों की गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के प्रयासों को देखते हुए विद्यालय में शिक्षक सम्मान समारोह आयोजित करने का तय किया गया और यह भी तय किया गया कि इस समारोह में तिपरका मानपुर की बाल सुरक्षा समिति के सदस्य एवं वहां का समुदाय भी भागीदार होगा।

तिपरका मानपुर की अगली बाल सुरक्षा समिति की बैठक में तिपरका बाल सुरक्षा समिति के कुछ चयनित सदस्य भी शामिल हुए ओर विद्यालय में आयोजित किये जाने वाले शिक्षक सम्मान समारोह के बारे में चर्चा की इस बस्ती के समुदाय एवं बाल सुरक्षा समिति के सदस्यों को समारोह के लिए आमंत्रित किया जिसको सबने स्वीकार किया तथा आवश्यक सहयोग देने का भी आश्वासन दिया।

इसी बस्ती की बाल सुरक्षा समिति की सक्रिय सदस्य श्रीमती राम बाई ने सुझाव दिया कि इस कार्यक्रम में हमारी ग्राम पंचायत संदोकडा के सरपंच महोदय को अवश्य आमंत्रित करें ताकि हम भी हमारे बच्चों को विद्यालय जाने मे रास्ते एवं नाले की वजह से आ रही परेशानी के बारे में बात कर प्रस्ताव दे सकें। राम बाई का समर्थन लाली बाई एवं कुंगर बाई ने भी किया।

नियत तिथी को शिक्षक सम्मान समारोह आयोजित हुआ जिसमें ब्लाक स्तरीय शिक्षा विभाग के अधिकारी व ग्राम पंचायत संदोकडा के सरपंच भी शामिल हुए। समारोह के उपरांत मानपुर की बाल सुरक्षा समिति के सदस्यों ने बस्ती के बच्चों को विद्यालय आने में आ रही रास्ते एवं नाले की समस्या के बारे में अधिकारियों एवं सरपंच को बताया तथा रास्ता ठीक करवाने व नाले पर पुलिया बनवाने के लिए अधिकारियों की उपस्थति में ही लिखित में प्रस्ताव भी दिया जिस पर सरपंच महोदय से प्रस्ताव प्राप्ति की रसीद भी ली।

सरपंच महोदय ने अधिकारियों की उपस्थिति में ही रास्ता ठीक करवाने का आश्वासन तो तुरंत दिया साथ ही नाले के उपर पुलिया बनवाने के प्रस्ताव पर आगे कार्यवाही करने का आश्वासन दिया।

मानपुर के बच्चों के लिए विद्यालय जाने का रास्ता तो सुगम हो गया है, पुलिया का काम प्रक्रियाधीन है। अभी तो मानपुर के बच्चे एवं अभिभावक खुश हैं।

15

बच्चों को विद्यालय में मिला शुद्ध पेय जल एवं पहुंचने के लिए सुगम रास्ता

बाल सुरक्षा समिति की विशेष बैठक थी, जिसमें स्थानीय उच्च प्राथमिक विद्यालय में गठित विद्यालय प्रबंधन समिति को भी आमंत्रित किया गया था साथ ही विद्यालय के प्रधानाध्यापक जी भी आमंत्रित थे। आज का विचारणीय विषय था विद्यालय के रास्ते एवं बच्चों को पीने के पानी की समुचित व्यवस्था उपलब्ध करवाना।

यह गांव है सेमलीफाटक, ग्राम पंचायत खटका पंचायत समिति शाहाबाद। ब्लॉक मुख्यालय से 30 किलोमीटर व ग्राम पंचायत मुख्यालय खटका से 5 किलो मीटर दूर बसा है। ब्लॉक मुख्यालय शाहाबाद सें सेमलीफाटक तक पक्की सडक है। गांव सेमली फाटक में राजकीय उच्च प्राथतिक विद्यालय है। आंगन बाडी व मॉ बाडी की सुविधा भी है।

गांव की सहरिया बस्ती में 112 सहरिया परिवार निवास करतें है। सहरिया समुदाय मुख्यतया खेंती एवं मजदूरी व मौसम अनुसार लघु वन उपज के कार्य पर निर्भर है।

नियत समय पर बैठक शुरु हुई। बाल सुरक्षा समिति अध्यक्ष ने अपनी तरफ से इस बात का जिक्र किया कि पिछले एक वर्ष से हम सब हमारे बच्चों की गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा के लिए काम कर रहे हैं, उसमें विद्यालय का पूर्ण रूपेण सहयोग रहा है तथा सकारात्मक परिणाम आने लगे हैं इसका सारा श्रेय माननीय प्रधानाध्यापक जी, उनके साथी शिक्षक, विद्यालय प्रबंधन समिति एवं गांव के पूरे समुदाय को जाता है, इसके लिए बाल सुरक्षा समिति की तरफ से सबका धन्यवाद ज्ञापित करता हूॅ।

लेकिन यह कार्य यहीं पूरा नहीं हो जाता हमें अभी इसके लिए काफी काम करना है। इसमें अभी कई रुकावटें व समस्याएं भी हैं, आज की बैठक इसी प्रकार की दो समस्याओं के समाधान के लिए बुलाई गई है जिसमे एक विद्यालय में बच्चों के लिए पीने के पानी की समुचित व्यवस्था तथा दूसरी विद्यालय तक बच्चों को पहुंचने का सुगम रास्ता।

इस पर उपस्थित सदस्यों ने सुझाव दिया कि इन दोनो कामों के लिए हम स्थानीय ग्राम पंचायत एवं पंचायत समिति में गांव एवं समुदाय की तरफ से प्रस्ताव दें। कुछ सदस्य जिम्मेदारी लेकर समय समय पर इस काम की प्रगति को देखें साथ ही जरुरत पडे तो समुदाय का दबाव भी बनायें।

उपस्थित प्रधानाध्यापक जी को भी इस विषय पर अपने विचार रखने के लिए कहा गया। प्रधानाध्यापक जी ने कहा कि मै समुदाय के विचार से पूर्णतया सहमत हूॅ साथ ही अगर मेरे अनुरुप कोई जिम्मेदारी समुदाय मुझे देना चाहेगा तो मै उसे भी निभाने का प्रयास करुंगा।

दोनो ही कामों के लिए अलग अलग प्रस्ताव बैठक मे ही तैयार किये गये। पूरे समुदाय के हस्ताक्षर करवाये गये। प्रधानाध्यापक जी ने भी इन दोनों कामों की विद्यालय में जरुरत एवं महत्व की टिप्पणी के साथ अनुमोदन के हस्ताक्ष किये।

दोनो प्रस्तावों को ग्राम पंचायत एवं पंचायत समिति में देकर आने तथा दोनों ही कार्यालयों में जिम्मदारों से बात कर के आने की जिम्मेदारी दो सक्रिय एवं जिम्मेदार सदस्यों को दी गई।

दोनों ही सदस्यों ने अपनी जिम्मेदारी बखूबी निभाते हुए प्रस्तावों को ग्राम पंचायत एवं पंचायत समिति कार्यालय में पहुंचाया। सरपंच महोदय एवं पंचायत समिति की प्रधान महोदया दोनों अलग अलग बात भी की एवं प्रस्तावों में वर्णित कामों की जरुरत को भी प्रतिपादित किया।

राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय सेमलीफाटक व उसमें काम कर रहे अध्यापकगणों के काम की प्रशंसा वैसे भी सब जगह फैली हुई थी इसलिए वहां की जरुरतों को भी प्राथमिकता से दोनो ही जगह(ग्राम पंचायत एवं पंचायत समिति) समझा गया और अनौपचारिक रूप से दोनो ही जगह से स्वीकृति का आश्वासन दिया गया।

दोनो ने वापस आकर समुदाय को इस बारे में जानकारी दी। क्योंकि दोनो ही कामों की स्वीकृति का पक्का आश्वासन दिया गया था इसलिए ज्यादा समय भी नहीं लगाा और अत्यधिक प्रयासों की जरुरत भी नहीं पडी केवल एक दो बार फोन से ही संपर्क कर जानकारी लेते रहे।

विद्यालय का रास्ता टाइलों युक्त हो गया था, शुद्ध पेय जल के लिए भी बोर एवं टंकी की व्यवस्था होकर पानी उपलब्ध हो गया था।

समुदाय, बच्चे एवं विद्यालय के अध्यापक गण खुश थे। सभी ने ग्राम पंचायत एवं पंचायत समिति का धन्यवाद ज्ञापित कर रहे थे।

प्रयत्न–परिचय

प्रयत्न संस्था

प्रयत्न संस्था एक स्वयं सेवी, धर्मनिरपेक्ष एवं गैर लाभकारी संस्था है। प्रयत्न संस्था की स्थापना वर्ष 1992 में हुई, जिसका उद्देश्य लोगों की असमानता और अन्याय की स्थिति में परिवर्तन लाना है। प्रयत्न मुख्य रूप से लोगों में शिक्षा एवं जागरूकता का संचार तथा सामुदायिक संगठन द्वारा सामाजिक परिवर्तन के प्रति कटिबद्ध है। संस्था के कार्य का आधार दलितों एवं पिछड़े वर्गों की क्षमता का विकास करना है ताकि वे असमानता एवं अन्याय की वंचना से मुक्त हो सकें। संस्था राजस्थान के धौलपुर, जयपुर, भरतपुर, करौली एवे उत्तर प्रदेश के वाराणसी, प्रतापगढ, आगरा एवं भदोही जिलों में कार्यरत है।

दृष्टिः

एक ऐसे न्याय संगत समाज की परिकल्पना, जिसमें प्रत्येक व्यक्ति को अपने विकास के समान अवसर प्राप्त हों, वह स्वयं की स्थिति का आलोचनात्मक विश्लेषण करने में सक्षम, जागरूक व समर्थ हो एवं इस प्रक्रिया में अपनी क्षमताओं को पहचानते हुए समानता, स्वतंत्रता, गरिमा और मानवीय अधिकारों को प्राप्त करे।

उक्त दृष्टि के साथ प्रयत्न समाज के पिछड़े एवं दलित वर्ग के साथ काम करता है जो असमानता एवं अन्याय का सामना कर रहे हैं।हमारा उद्देश्य स्थानीय समुदाय के संबन्धों को मजबूत करना है ताकि लोग अपने जीवन में सकारात्मक बदलाव के लिए मिलकर काम कर सकें। हम इस प्रक्रिया में भारत में समाज के सबसे पिछड़े एवं अशक्त समूह विशेषकर महिलाओं को प्रोत्साहित करते हैं, ताकि वे भी जो मुद्दे महिलाओं के जीवन को प्रभावित करते हैं उन पर नेतृत्व एवं निर्णय लेने में सक्षम हों। प्रयत्न सतत विकास के क्रियान्वयन की प्रक्रियाओं में समुदाय के बीच उत्प्रेरक की भूमिका का निर्वहन करती है ताकि समुदाय आगे एवं लम्बे समय के लिए आत्म निर्भर हो सकें।

उद्देश्यः

- समाज के सबसे पिछड़े वर्ग विशेषकर महिलाओं एवं बच्चों का सशक्तिकरण की प्रक्रियाओं में सुसाध्यकरण करना।
- स्थानीय समुदाय की कार्यक्रम आयोजना, क्रियान्वयन एवं मूल्यांकन में भागीदारी के लिए सुसाध्यकरण करना।
- समाज के सामाजिक, राजनैतिक एवं, आर्थिक ताने बाने को प्रभावित करने वाली समस्याओं एवं मुद्दों के लिए काम करने के लिए सामाजिक संगठनों को लाम बंद करना एवं लोगों के संगठन तैयार करना।

- स्थानीय स्तर पर स्थानीय नेतृत्व को उचित बढावा देना ताकि वे समुदाय में आवश्यक पहल कर सकें।
- जागरूकता एवं नीतिगत हस्तक्षेपों के लिए एक सूचना तंत्र तैयार करना।

- **कार्यक्रम की रणनीतिः**
  - प्रत्यक्ष हस्तक्षेप व सक्रिय भागीदारी के लिए जन संगठन तैयार करना।
  - जागरूकता के लिए जन शिक्षा एवं क्षमता विकास के माध्यम से अंतःकरण का विकास करना।
  - जन आधारित एवं सतत कार्यक्रमों का संचालन एवं परीक्षण करना।
  - नीति के निर्धारण एवं क्रियान्चयन को प्रभावी करने के लिए अनुसंधान करना।
  - महिलाओं एवं बच्चों के अधिकारों की पैरवी करना।
  - सूचना के अधिकारों का प्रसार प्रलेखन द्वारा करना।
  - सामाजिक परिवर्तन के लिए भागीदारी की शुरूआत सुनिश्चित करना।
  - लोगों की संस्थाओं के विकास के लिए सहायता तथा परामर्श प्रदान करना।
  - लोगों की समस्याओं को राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर उजागर करना एवं एकता के कार्यों को बल देना।

प्रयत्न संस्था,

68 / 337, प्रताप नगर, सांगानेर–302033, जयपुर, राजस्थान, भारत

फोनः– 0141–2792919

ई–मेलः prayatnraj@yahoo.com

वेब पताः www.prayatn.org